श्रीमान् मुनिश्री हंसवीजयजी महाराज.



जन्म. १९१४ ना
दिवाळीना दिन.

दीक्षा १९३५
महा वदी ११

श्री हंसविजयजी जैन फ्रीलायब्रेरी ग्रंथमाला पुष्प ११ वा

ॐ

मांडवगढका मन्त्री-

अथवा

पेथडकुमारका परिचय.

संयोजक.

न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरशिष्य

पंडित वर्य्य श्री लक्ष्मीविजयजीमहाराजके शिष्य

श्रीमान हंसविजयजी महाराज.

संस्कारक

वकील झमकलालजी रातडीया.

प्रकाशक

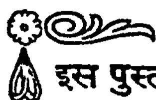
श्री हंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरी वडोदा.

प्रथमावृत्ति	वीर संवत	विक्रम सं. १९७९
प्रत १०००	२४४९	मूल्य ४ आने

अमदावाद श्री [illegible] प्रिन्टिंग प्रेसमां
शा मोहनलाल चीमनलाले छाप्यु



आभार.



इस पुस्तकके प्रसिद्ध करनेमें जिन सधर्मि भाईयोंने अपना पुण्योपार्जित लक्ष्मीका सदुपयोग किया है उनका उपकार माने विना हम नहीं रह सकते. अमरावती निवासी श्रीयुत फतेचन्दजी फलोधिया, कि जिन्होने अमरावतीमें श्री जिन मन्दिर वनवाकर वडे समारोहके साथ प्रतिष्ठा महोत्सव किया, और वहांपर यात्रालु लोगोके लिए एक धर्मशाला वनवाई है और उद्यापन करके अपना जीवन सफल किया और कररहे हैं उन श्रीमान्की धर्मपत्नि श्रीमती अमृतबाईने २५०) रुपये दिये हैं तथा जयसिंह-भाई उगरचन्द दलाल अमदावादवाले जिन्होने उद्यापनादि में अच्छा धन खर्च किया और कर रहे हैं उन्होंने २०१) रुपये दिये हैं. तथा सूरत निवासी झवेरी भूरियाभाई जीवनचन्दने २५) रुपये तथा कालियावाडीवाले नेमचन्द भाई फकीरचन्दने २५) रुपये दिये हैं इस लिए हम उपरोक्त सद्ग्रहस्थोंका अंतःकरण पूर्वक उपकार मानते है कि जिन्होने परमपूज्य श्रीमान् हंसविजयजी महाराजके वनाये हुए ईस धर्म परिपूर्ण ऐतिहासिक पुस्तकके प्रगट करनेमें मदद दी है।

श्री हंसविजयजी जैन

फ्री लायब्रेरी के सेक्रेटरी

वडोदा (स्टेट)



श्रीयुत बाबू लक्ष्मीचन्दजी कर्णावत.



अवसान न. १०

श्री जिनेंद्राय नमः

(अर्पण पत्रिका)

श्रीमान् स्वर्गीय श्रावकवर्य्य वाबुसाहेब लक्ष्मीचंदजी कर्णावत.



आपने इस संसारमें उच्चकुल व सर्वोत्तम धर्म पाकर श्रीसिद्धाचलजी तथा श्रीसम्मेत शिखरजी तथा श्रीपावापुरीजी वगेरे तीर्थयात्राके साथ देवगुरुस्वधर्मीकी भक्ति करके अपने आत्माका कल्याणकिया और अपने सुपुत्र श्रीयुत हनुमानसिंहजी कलकता निवासीको संसारमें छोडकर स्वर्ग सिधार गये

श्रीमान् तुम्हारे पुत्रादि परीवारने भी श्री सिद्धाचलजी उपर सेठ मोतिशाहकी टुंकमें देहरी लेकर श्रीसुपार्श्वनाथजी आदि परमात्माकी ५ मूर्तियां स्थापनकी जिनका स्तवन निचे रोशनकियाहै इसी तरह देवगुरु ज्ञानकी भक्ति तनमन धनसें करके अपने द्रव्यका सदुपयोग कियाहै और कर रहे हैं तथा हमारी संस्थाके प्रथम वर्गके मेंबर होकर सहायता दीहै अतएव इस पुस्तक की आदिमें आपका फाटु देकर यह ग्रन्थ आपको सादर समर्पण कर आपके आत्माको अखंड शांति प्राप्त हो यह चाहते हैं.

आपका सहधर्मी बन्धु

प्रकाशक.

उपर दर्शाया हुवा श्री सिद्धाचलजीका स्तवन



काफी

नेमि निरंजन ध्यावोरे वनमें तपकीनो

यह चाल.



स्वामीसुपार्श्वजिणंदारे, दिये परम आनंदा

ए आंकणी.

शांत वदन शीतलता अर्पे ।
जैसे गगनमें चंदारे ॥ दिये० (१)

सिद्धाचलपर समवसरणमें ।
सेवे सुरनर इंदारे ॥ दिये० (२)

तैसे तुमारी सेवा कारण ।
मूर्त्ति ठवे सानंदारे ॥ दिये० (३)

मोति शाहको टुंकमनोहर
काटे कर्मका कंदारे ॥ दिये० (४)

कलकत्ताके निवासी कर्णावत ।
हरवा भवोभव फंदारे ॥ दिये० (५)

लक्ष्मीचंदजी सुत हरमानसिंह ।
हर्ष धरीअमंदारे ॥ दिये० (६)

हंस कहे वहां पांच प्रभुकी ।
प्रतिमा पूजो भवि चंदारे ॥ दिये० (७)



(सूचना)

जिस महान नररत्न का परिचय इस पुस्तक में कराया गया है उसके जीवन चरित्र की तुलना करके और उसका अनुकरण करके मनुष्य अपने जन्मको सफल कर सकता है। पेंथडकुमारने अपनी दरिद्रावस्था में किस प्रकार से धैर्य रक्खा और अपनी उन्नतावस्था में अपने द्रव्य को किस तरह सन्मार्ग में खर्च किया और धर्म की किस प्रकार सेवाकी यह सब बातें पाठकोंको इस छोटीसी पुस्तक से अच्छी तरह मालुम हो जायेंगी। सुकृतसागर काव्य में पेथड कुमारका चरित्र वर्णन किया गया है उसपर से भव्य जीवोंके हितार्थ संक्षेप में यह पुस्तक परमपुज्य शान्त मूर्ति हंससमनिर्मल प्रातःस्मरणीय श्रीमन्मुनि श्री हंसविजयजी महाराज साहबने लिखी है अतएव हम आपका अन्तःकरण पूर्वक उपकार मानते हैं।

प्रस्तुत वृतान्त ईस्वी सन् १२०० के साल के लगभग अर्थात् १३ वीं सदी में बना है*। इसके साथ यह ऐतिहासिक वृत्तान्त अपनी जैन समाज को भी उपयोगी होना सम्भव मालुम होता है। उस समय

* "मांडवगढनो मंत्री पेथडकुमार" से उद्धृत

—प्रकाशक.

दिल्ली के तख्त पर खिलजी वंश का अलाउद्दीन खूनी बादशाह राज करता था जिसने इस्वीसन् १२९७ में कर्णवेला के पास से गुजरात सर किया वही अलाउद्दीन बादशाह अपने वृत्तान्त के समय में होगा ऐसे आसपासके संयोग देखने और इतिहास का अवलोकन करने से मालुम होता है। और अपने इस वृत्तान्तमेंभी एक जगह ऐसा सुबूत मिलता है- कि अलाउद्दीनखिलजी से सन्मानित पूर्ण नामक श्रावक जूनागढ आया हुवा था और अपने वृत्तान्त का नायक पेथडकुमार भी वहां गया था। वहां उनका समागम और वादविवाद हुवाथा इस पर से भी अनुमान हो सकता है कि वही अलाउद्दीन बादशाह होना चाहिये। ऐसेही गुजरात की गद्दीपरभी भीम बाणावली के वंश परम्परा से अनुक्रम से कर्ण, सिद्धराज, कुमारपाल, भोलाभीम वगेरे हुवे। उस भोले भीमके वक्त में दिल्ली की गद्दी पर पृथ्वीराज चौहान था उसके पास से शाहबुदीनगोरीने राज्य ले लिया। यानि दिल्ली की गद्दी शाहबुदीन के हाथ मे आई, उसके पास से तुगलकवंशमें और वहां से खिल्जी वंश में गई। अपने वृत्तान्त के समय में खिल्जी वंश का अल्लाउद्दीन बादशाह था और भोले भीम से अनुक्रम से कालान्तर में गुजरात की गद्दी

(कर्णवाघेला हुवा जिसके पास से अलाउद्दीन
ादशाहने गुजरातका कब्जा लिया और एक वक्त
ा राना जंगल मे भटक भटक कर मर गया। जिस
ार्समें दिल्ली और गुजरात के भाग्य चक्रका चम-
त्कार हो रहाथा उस वक्त मालवा प्रान्तान्तर्गत
ांडवगढ नगर वडा समृद्धिशाली था और उस वक्त
हां परमार वंशीय मालवे का प्रख्यात राणा जयसिंह-
व राज्य करता था।

उस वक्त माण्डवगढकी स्थिति मध्यान्हकाल
जैसी थी परन्तु दैव की गति विचित्र है। काल की
गति भिन्न है इससे वह भी काल के चक्कर में पड
गया और उसकी वहुतसी निशानियें नष्ट हो गई।
इस वक्त वहां एक छोटा सा गांव है उस वक्तका
मनोहर किला पृथ्वी ने अपनी गोद में छिपा लिया
है। वर्त्तमान में गॉव के प्रवेशद्वार पर एक पत्थर का
तोरण और पृथक २ स्थानों पर प्राचीन मंदिर व
खंडरों के चिन्ह दिखाई देते हैं। वहां पर वर्त्तमान में
श्री शान्तिनाथ भगवानका जिनालय है और उसमें
स्थित श्रीसुपार्श्वनाथ भगवानकी प्रतिमा महासती
सीता के शील के प्रभावसे वज्रभूत हो गई थी जो
इस वक्त मौजूद मानो जाति है। वहुतसे जैन लोग
वहां यात्रा करने के लिये जाते हैं तब वास्तव में प्रा-
चीन छटा का उनको प्रत्यक्ष भान होता है।

ईस्वीसन् १२०० की सदी में पेथडकुमार का जीवन जगत् को उपयोगी हुआ है उसके गुरु उस वक्त सुप्रसिद्धः श्रीमद् धर्मघोष सूरीश्वर थे उनके लगभग २०० वरस के पीछे उनका चरित्र लिक्खा गया हो ऐसा मालुम होता है क्यों कि उनके पाट परम्परा पर श्री सोमसुन्दर आचार्य हुवे जो लगभग श्रीमद् देव सुन्दरसूरि और ज्ञान सागरसूरि के समय में हुवे हों ऐसा मालुम पडता है। उनके पीछे उनके पटधर मुनि सुन्दरसूरि हुवे और उनके पटधर रत्नसागरसूरि हुवे उनके शिष्य श्री नन्दी रत्नगणी और उनके शिष्य श्रीरत्न मंडन गणी हुवे जिन्होंने सुकृत सागर काव्य उपकारार्थ वनाया। वे प्रायः रत्नशेखर सूरिके वक्त में हुवे हों ऐसा विदित होता है। रत्नशेखर सूरि का जन्म संवत १४५२ में हुवा, १४६३ में दीक्षा ली, १४८३ म पण्डित हुवे, १४९३ में उपाध्याय हुवे, १५०२ में आचार्य पदवी प्राप्त की और १५१७ में स्वर्गस्थ हुवे। उस समय में यानि लगभग २०० वरस में यह वृत्तान्त लिक्खा गया हो ऐसा अनुमान होता है।

आशा है कि इस वृत्तान्त को पढकर पाठकगण उचित शिक्षा ग्रहण करेंगे।

प्रस्तावना.

वन्दे वीरमानन्दम् ।

द्रव्यैर्जिनमन्दिराणि रचयत्यभ्यर्चयत्यर्हत-
भक्त्या यतिनां तनोत्युपचयं वस्त्रान्नपानादिभिः ।
। पुस्तकलेखनोद्यममुपष्टभ्नाति साधर्मिकान्,
ाभ्युद्धरणं करोति कलयत्येवं सुपुण्यार्जनम ॥१॥

इस अगाध संसार सागरमें अनेक जीवात्मा एक भवावनारी हैं, अन्य दो भवों ंसार पार होने वाले हैं, कीननेही जीव तीसरे में अनादि कालकी डगमगाती हुई अपनी नय्या- पार लगानेका शाहो परवाना ले चुके हैं । एवं संख्य जन्मों में और कई असंख्य जन्मों में मोक्ष पाने के अधिकारी बन चुके हैं । इतनी शीघ्रता (आसानीसे जीवात्मा धम सामग्रीको सेवनासे हो अपार संसारसे पार हो सकता है । धर्मको सा- ' में कतिपय अंग वह हैं जिनका कि नामनिर्देश र किया गया है ।

मतलब कि कइ भव्यात्मा जिनमंदिरोंके बनवा- तथा उनका उद्धार कराने से संसार पारगामी हैं, अर्थात् सुलभ बोधि होकर उत्तरोत्तर उन्नत

दशाको प्राप्त होते हुए मोक्षाधिकारी हुए हैं। यथा संप्रतिनरेश।

कइ पुण्यात्मा त्रिकाल जिनपूजन करके निज मनको शुभयोगमें स्थिर कर संसारसे उत्तीर्ण हो गये है यथा नागकेतु।

अनेक उच्चात्मा सद्गुरुओंकी सेवासे ही स्वकार्य साधक हो गये हैं। जैसे कि, परदेशी राजा और चौलुक्य चूडामणि कुमारपाल भूपाल।

अनेकोंही उदाराशय महानुभाव श्रीजिनागमोंके लेखनादि क्रियाद्वारा उद्धार करने करानेसे जगत्में प्रसिद्धिके पात्र और जन्मांतरमें सद्गतिके भाजन हो गये हैं। जैसेकि, भगवान् श्री देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण और स्कंदिलाचार्य प्रभृति साधुमहोदय तथा गृहस्थोंमें संग्रामसिंह-सोनी आदि सज्जनवृंद। साधर्मिक पुण्यात्माओंके बहुमानसे स्वयं बहुमानके पात्र बनने वाले उच्चात्मा तो, श्री जिनशासनमें गणनातीत हो चुके हैं, जिनमें श्री संभवनाथ स्वामी तीसरे तीर्थंकर भगवानका उदार चरित विशेष उल्लेखनीय एवं मननीय और अनुकरणीय हैं ?

आपने पूर्व भवमें अति दुर्भिक्षके समय साधर्मिक लोगोंका पालन निजात्माके समान किया था, जिसके प्रभावसे आप अगले भवमें देवर्द्धिका उपभोग

(इस अवसर्पिणीमें इसी भरतक्षेत्रमें वर्त्तमान चतु-
र्शतिके तीसरे तीर्थंकर त्रिलोकी नाथ हुये।

दीनात्माओंके उद्धारकोमें तो अन्य उदाहरणों-
। आवश्यकता नहीं मालूम देती है। भगवान् तीर्थं-
र देवका हीदृष्टांत पर्याप्त हैं। पशुओंके आक्रंदको
नकर उनको दया विचार उन दीन दुःखो पशुओं-
ो मुक्त कराकर विरक्त हुए हुए विवाहके रथको
रत पीछे मोडलेने वाले वालब्रह्मचारी प्रभु श्री ने-
मेनाथ कुमारकी कुमार कथाको, एक विषधर-सर्प
ो घोर पापसे बचानेके लिये उसके दृष्टि विष और
ष्ट्रा विष-डंकको सहन करके पंदरह दिन तक भूखे
यासे एक ही स्थानमें उस आत्माके उद्धारार्थ ध्यान-
स्थ खडे रहने वले चरम तीर्थंकर प्रभु श्री वीर पर-
मात्माकी वीरचर्याको, मेघरथ राजाके भवमें कबूतरको
रक्षाकी खातर शरणागत वत्सल क्षात्र धर्मके लिये
जान कुरबान करने वाले सोलमे तीर्थंकर श्री शांति-
नाथ प्रभुके धैर्यको, एवं यज्ञमें हवन किये जाने वाले
एक घोडेको बचानेके लिये और उस गिरी हुई आ-
त ाके उद्धारकी खातर एकदम साठ योजनका विहार
करके आने वाले वीसमे भगवान् श्री मुनिसुव्रतस्वामी
तीर्थंकरके उस परोपकार रूप सुव्रतको कौन भूल
सकता है ?।

मांडवगढ और पेथडशाह

कवि कालिदासने एकठिकाने लिखा है कि-



यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
माविष्कृतोऽरुणपुरस्सर एकतोऽर्कः ।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां,
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु ॥१॥

वह १२ योजन लंबी और ९ योजन चौडी अयोध्या जिसमें भरत और सगरजैसे पट् खंडाधिपति, हरिश्चन्द्र, और दधीचि जैसे सत्यसंध, राम लक्ष्मण जैसे प्रजापालक नरपति हो गये आज किस हालतमें है ? जहां शांतिनाथ, कुंथुनाथ, और अरनाथ जैसे तीर्थंकर सम्राटोंके जन्माभिषेकादि कल्याणकोंके समय देव देवेंद्रोंका आगमन हुआथा, आज वह हस्तिनापुर किस गिनतीमें है ? जिसको आबाद करके चित्रांगद राजाने आदेश किया था कि, यहां करोटपतिके सिवाय औरकिसीको स्थान न मिलेगा ? आखीर करोडपतियोंमे तमाम जगह भरजानेसे लक्षाधिपतियोंके लिये तलहट्टी पर हजारों मकान

नाने पडे थे आज वह चित्रकूट (चितौड) नाम और
था शेषके सिवाय और किस बातका अस्तित्व
खता है ?

और सुनिये। राजग्रही कि जहां श्रेणिक राजा
श्रेणिवद्ध हाथी झूला करते थे, जहां धन्ना—शालि-
द्र जैसे दिव्यभोगी श्रेष्ठिनंदन रहते थे। नालंदा
ाडा कि जहां—भगवान् ज्ञातनंदन श्रीमहावीर प्रभुके
ौदह चौमासे हुये थे, और कुछ अरसेके बाद जहां
ाद्ध धर्मका महाविद्यालय ऐसा विशाल बना था कि
ासमें चीन तकके विद्यार्थी पढनेको आया करते थे।
ाज वह नगरी देखनेको भी कहीं है ? हां खंडहर
ा पडे हैं।

सारनाथ जो स्थान बुद्धदेवके प्रथम उपदेशके
ारण संसार भरमें प्रसिद्ध था, अशोक जैसे महा-
जाओंने जहां गगनचुंबी मंदिर बनवाये थे, आज
स स्थानमें दिनमें भी भय लगता है।

काश्मीर देशके प्रख्यात शहर श्रीनगरके निकट
ल नदीके किनारे जहांगीर बादशाहने जो महल
नवाया था उसमें काश्मीरकी कुल आमदनी खर्च की
ाती थी। इसके इलावा एक करोड दस लाख रुपया

बादशाही खजानेसे भी खर्च किया गया था। इस महलके आसपास नसीम, नशान और शालामार नामके तीन बागीचे लगाये गये थे। जिन्हें देखकर मनुष्य इन्हें स्वर्ग और सुमेरु समझ लेते थे। जिनमें बादशाह नूरेजहां के प्रेममें मशगूल होकर दोनों जहांनोंसे बेखबर फिरा करताथा। आज उस महलका नामोनिशान नहीं रहा है, बागीचोंमेंसे केवल एक बागमें कुछ साधारणसे पेड (वृक्ष खडे हैं।

इधर बम्बइ कलकत्ता जैसे भारतके सुप्रसिद्ध शहर कि, जहां कुछ समय पहले थोडे थोडे झोंपडे पडे थे आज उनमें लाखों मनुष्योंकी बस्ती है। इससे सिद्ध है कि, आज जिसका उदय है कालांतरमें उसका अस्त है और आज जो सूखा पडा है कालांतरमें वह खिलेगा। परिवर्त्तन रूपही तो संसार है। किसी कविने ठीकही कहा है:—" नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण."

इसी प्रकार आज जो मांडवगढ वीरान उजाडसा पडा है, वही मांडवगढ इस दशामें था कि, जहां के रहने वाले सेठ—सैंमाशाहने करोडों रुपये खर्चके गुजरात देशके व्यापारियोंको नीचा दिखाया था? यह कथा जैनसंप्रदाय शिक्षा आदि भाषाग्रंथोंमेंभी

ःखी गई है। प्रायः बहुतसे जैन लोग इसबातसे
त्र परिचित हैं।

वही मांडवगढ है कि, जहां के रहने वाले संग्रा-
सिंह–सोनीनें अपने धर्माचार्य श्री ज्ञानसागर-
रिके प्रवेश महोत्सवमे ७२ लाख द्रव्य खर्च किया
। ६३ हजार अशर्फियां–सोनामोहरों से ज्ञान
।न कर श्रीगुरुमुखसें पंचमांग–श्रीभगवतीसूत्रका
।ख्यान सुना था।

प्रसंग वश संग्रामसिंहकी उदारताका और स-
ारताका कुछ परिचय दिया जाना अनुचित नहीं
। जायगा.

एक दिनका जिकर है कि, संग्रामसिंहने गुरुम-
ाजके चरणोंमें प्रार्थना की कि, प्रभो ! आप जैसे
ार्थ गुरुओंका योग बडे पुण्यसे मिलता है इसलिये
। कृपा करें, व्याख्यानमे प्रभावशाली श्री भगव-
ुत्र सुनावे, ताकि आपसे सद्गुरुका मिला योग
ल होवे। गुरुमहाराजने समयानुसार योग्य श्रोता
ाजको देख शुभ मुहूर्त्तमें श्री भगवतीसूत्रका व्या-
न शुरू कर दिया। सोनीजीको सुननेमें इतना
और उत्साह आया कि, गुरुमहाराजके सुनानेमें
भगवतीसूत्रके पाठमें जब जब गोयमा यह पद

आता था नव नव सोनीजी एक एक सोना मोहर ज्ञान पूजामें भेट करते थे अर्थात् ज्ञानपर चढाते थे। श्रीभगवतीसूत्रमें गोयमा शब्दका प्रसंग ३६ हजार वार आता है उसमुजिब ३६ सहस्र मोहरें तो खुद सोनीजोने ज्ञान पर चढाई। प्रति प्रश्न इसी प्रकार आधी आधी मोहरके हिसाबसे १८ हजार मोहरें सोनीजीकी धर्म पत्नीने चढाई और चतुर्थांशके हिसाबसे ९ हजार पुत्रवधूने चढाई। एवं कुल ६३ हजार मोहरें समझ लेनी। कहते हैं कि इस रकममें एक लाख पंनालीस हजार मोहरें और मिलाकर इन कुल २ लाख ८ हजार मोहरें ज्ञान-पुस्तकोंके लिखवानेमें खर्च करदीं। संग्रामसोनीके लिखवाये सुनहरी चित्राम और सुनहरी ही अक्षरोंके कल्पसूत्र मूल-जोकि वारां सौ के नामसे जैन समाजमें प्रसिद्ध है, प्रायः बहुतसे जैन भंडारोंमें उपलब्ध होते हैं।

उदारताके साथ आप सदाचारी-ब्रह्मचारी-स्वस्त्री संतोषीभी परले दर्जेके थे। एक वक्तका जिकर है-

बगीचेकी सैर करते हुए बादशाहने तमाम आम फले हुए देखे, किंतु एक आम ऐसा देखा कि जि-

१ ऐसी प्रतियां बडोदा ज्ञानमंदिरमें महाराज श्री हंसविजयजीके पुस्तक संग्रहमें मौजुद हैं।

का फल फूल कुछभी नहीं था। बादशाहने बाग-
नसे पूछा, इस वृक्षकी यह दशा क्यों? मालीने
हा—जहांपनाह! यह वृक्ष वंध्य है। बादशाहने कहा,
। फिर इसके रखनेसे क्या लाभ? इसे कटवा दो।
समें सोनीजी भी खडे थे, आप राजमान्य भी थे।
पने अर्ज करदी कि, बराय महरबानी आप इसे
डा रहने दें, मैं इसको समझा दूंगा। मैं उम्मीद
रता हूं यह वृक्ष एक सालके अर्सेमें फल देगा! बा-
शाहने सोनीजीके विनयको मान लिया।

अब सोनीजी रोज बागमें जाकर स्नान करते हैं
ोर अपनी धोतीका पल्ला उस आमके वृक्षकी जडमें
चोडते हैं। साथमें हाथ जोडकर प्रार्थना करते हैं
ि, हे वनदेवतामहाराज! मैंने जन्मसे लेकर आज
ंत परस्त्रीका संसर्ग नहीं किया है, अपने ब्रह्मचर्यको
णोंसेभी अधिक प्रिय मानकर सुरक्षित रखा है। यदि
: ब्रह्मचर्यका सच्चा प्रभाव है तो यह वृक्ष फल दे।
भा भो यही—दूसरे वर्ष सब वृक्षोंसे पहले उस वृक्षके
प आया तथा सबसे प्रथम ही फल भीआये। बा-
ानने कुछ फल बादशाहको भेट किये, और सब
त सुनाई। बादशाह बहुत खुश हुआ और सोनी-
को बडे आदर सत्कार पूर्वक हाथी परबैठा मारे
ारमें बाजे गाजेके साथ फिराकर राज दरबारमें

का उतारा और पारितोपिक व पोशाक इत्यादिसे यथोचित सत्कार कर उन्हें उनके घरकी ओर विदा किया। इस घटनाका समय विक्रम संवत् १५२० की आसपासका है। विशेप परिचयके लिये लघुपोशालीय गच्छ पट्टावली और संग्रामसोनीकृत बुद्धिसागर ग्रंथ देख लेना ठीक है। इस पुरुप रत्नकी उत्पत्ति इसी मांडवगढमें थी?।

सहस्रावधानी आचार्य श्रीमुनिसुंदर सूरिजीके प्रशिष्य आचार्य श्रीलक्ष्मीसागर सूरिजीने जिन ११ सुयोग्य मुनियोंको अपने हाथसे आचार्य पदवी प्रदान की थी। उनमेंसे एक आचार्य महाराजका नाम था साधुरत्नसूरि। ये आचार्य बडे वैराग्यवान थे, इनका जीवन चरित्र बडा ही रोचक और हृदयद्रावी है।

ये सूरि महाराज अपने परिवारसहित मांडवगढ पधारे। इनके धर्मोपदेशकी नगरमें बडी धूम मचगई-थी, कई धर्मात्मा लोगोंने अनेक धर्म कृत्यों द्वारा अपना अपना जीवन सफल किया।

इसी नगरमें जावडशाह नामा एक श्रीमाली साहूकार रहता था। उस समय उसकी बराबरी करनेवाला अन्य कोई श्रीमाली वहां नहीं था। इसी लिये जावडशाह—'श्रीमालभूपाल' और 'लघुशालिभद्र' इन दो उपनामोंसे संबोधित किया जाता था। इस

आचार्य महाराजश्रीके नगर प्रवेशोत्सवमें
शुभ कार्योंमें एक लाख रुपयेोंका व्यय

ऋषभदेव, श्रीशान्तिनाथ, श्रीनेमिनाथ, श्री
और श्री महावीर स्वामी इन पांच तीर्थं-
'च मंदिर बनवाये। एक ११ सेर सोनेकी और
सेर चांदीकी एवं दो श्री जिनप्रतिमा बन-
न सब मंदिरांकी और प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा
हने इन्ही पूर्वोक्त आचार्य महाराजसे करवाई-
नष्ठामें उदार दिलके जावडशाहने ११ लाख
य कियाथा।

हरे! मांडवगढ! तुझे नगर कहिये कि पु-
या स्वर्ग कहिये?

तिम प्रमाण हमें पट्टावलियों द्वारा यहां तक
है कि, जहांगीर बादशाहके राजकालतक
ारीकी ध्वजा खूब फहरातीथी। उक्त बादशा-
ो नगरमें श्री विजयदेव सूरिजीको महातपा
ावी दी थी।

ास घटनाका समय विक्रम संवत् १६७४ है।
अभीतक जिन महापुरुषोंका अर्थात् संग्रामसिंह
, जावडशाह और श्री विजयदेवसूरिजीका उल्लेख

ऊपर किया गया है, वह क्रमसे सोलहवी और सतारवी सदीके नररत्न थे। अपने चरित्र नायकका समय उनसे भी दो सदी पहलेका होनेसे उस वक्तका मांडवगढ तो और भी ऋद्धि वृद्धिमें चढता था। पेथडशाहने जो करोडों रुपये धर्मकार्योंमें खर्च किये, इसमें एक और भी कारण था। पेथडशाह व्यापारमें निपुण था इतना ही नहीं, बल्कि उसके पुण्यके प्रभावसे वह, मांडवगढके नायक राजा जयसिंहका मंत्री भी था। इसके इलावा उसका पुण्य ऐसा जबरदस्त था, जिधरको वह हाथ डालता चारों हाथोंसे मानो लक्ष्मी देवी उसका सत्कार करती थी।

"पेथडशाहके प्रसिद्ध कृत्योंका दिग्दर्शन."

१ आचार्य श्री धर्मघोषसूरिजीके पास परिग्रह प्रमाणमें ५ लाख टंक रखा था।

२ गुरु महाराजसे सम्यक्त्व स्वीकार किया उसके उत्सव निमित्त एक एक लड्डु और एक एक टंककी एक लाख पचीस हजार अपने साधर्मिक भाईयों को प्रभावना दी थी।

३ राजा जयसिंहके मांगनेसे चित्रावेल और कामकुंभ जो उसके पास थे राजाको भेट कर दिये थे।

४ एक ही रोजमें १६ योजनका पंथ करके गुरु महाराजके आगमनकी—(पधारनेकी) खबर लाने वाले

द्मीको वधाईमें एक सोनेकी जीभ-(जवान) और
ेस हीरेके दांत वनवा दिये थे।

५ वहत्तर हजार सोनामोहरें गुरु महाराजके न-
प्रवेशमहोत्सवमें खर्च की थी।

६ गुरु महाराजकी देशनाको सुनकर १८ लाख
खर्च कर ७२ देवकुलिका सहित "शत्रुंजयावतार"
नामका वडा भारी श्री जिनचैत्य मांडवगढमें व-
याथा। *

७ सवा करोड रुपया दानशालओं में खर्चकिया।

८ हरएक मासकी द्वितीया, पंचमी, अष्टमी,
दशी, और चतुर्दशी इन दशदिनोंमें सातही व्य-
निषेधकी राज्यकी तर्फसे मुनादी-(उद्घोषणा)
।

राजा जयसिंहको समझाकर व्यसनोंसे बचाया।

१० वत्तीस वर्षकी भर जवानीमें स्त्री सहित
व्रत-ब्रह्मचर्य व्रतका स्वीकारकिया और याव-
-(ताजिंदगी) विशुद्ध हृदयसे उसका पालन

वाकी अन्य जैनमंदिर कितने वनवाये उनकी
लि देनेके लिये अवकाश न होनेसे इतनाही
ना पर्याप्त है कि, इस कार्यकी संख्याके लिये
महोदय "सुकृतसागर" काव्यका चतुर्थ तरंग
स्तुत हिन्दी ग्रंथ देख लेनेकी कृपा करें।

११ प्रतिदिन प्रातः और सायं दोनों समय प्रतिक्रमण करनेका नियम।

१२ त्रिकाल प्रभुपूजा करनेका नियम।

" कुछ विशेष–ज्ञातव्य बातें."

संसारमें प्रसिद्ध बात है कि, "जैसा आहार वैसा डकार" मनुष्यके अंतःकरणके भाव उसके कार्योंसे जाने जाते हैं। मूल ग्रंथमें पेथड मंत्रीके ब्रह्मचर्य व्रतका वर्णन किया गया है, उसमें खास एक बात बडे मारकेकी है जो नीचे लिखी जाती है। ताम्रलिप्ती नगरीके भीमसिंह–सोनीने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया उसकीखुशीमें अनेक ठिकाने समान धर्मवाले ब्रह्मचर्य व्रतधारी धर्मात्माओंको पोशाकेंभेजीं। शासन प्रभावक समझकर पेथडशाहको भी एक पोशाक भेजी। पेथडशाहने आदर पूर्वक वह पोशाक लेली परंतु पहनी नहीं। पेथडशाहको इस बारेमें कुछ उदासीन देख कर उनकी धर्मपत्नीने पूछा कि, आप इस पोशाकको उपयोगमें क्यों नहीं लाते ? शेठजीने उत्तर दिया–प्रिये ! ब्रम्हचारिकी दी हुई वस्तु ब्रह्मचारीको ही शोभा देतीहै, मेरे जैसे कायरोंको उन पुरुषसिंहोंका वेश नहीं शोभता ! हां यदि तूं अनुमति दे तो मैं भी ब्रह्मचर्यव्रत लेकर उन उत्तम पुरुषोंकी पंक्तिमें दाखिल हो सकता हूं। मैं संसारके विषय सुखोंको

ाहलविष समझता हुआभी तेरे आग्रह और लि-
जसे भोगी बना हुआ हूं! मेरी इच्छातो विरक्त
नेकी ही है। स्त्रीने सविनय प्रार्थना की, प्राणनाथ!
ातो पत्यनुगामिनी'–पतिव्रता सती स्त्रीका धर्म है
जो पति देव कहें सहर्ष उनकी आज्ञाका पालन
। आप बडी खुशीसे अपना मनोरथ सफल करें,
ी साथमें ही तैयार हूं। बस फिर देरी ही क्या
' बडे आनंदसे उत्सव पूर्वक ३२ वर्षकी युवाव-
ं दंपतिने विधि सहित गुरुमहाराजके समक्ष
ार्यव्रत ले लिया। धन्य है ऐसे धर्मधन पुरुष
को!!

' उपकार स्मरण और गुरुभक्ति."

ऊपर श्री धर्मघोषसूरिके प्रवेशका संकेतमात्र
कियाजाचुका है इस लिये पुनः लिखना पु-
है, तो भी एक बात खास वर्णनीय है। वह
'–जब कभी शाह गुरुमहाराजके अपने पर हुए
ंको स्मरण करता तब उसका दिल भर आता,
गद होजाता, हाथ जोड कर परम विनीत
प्रत्यक्ष वा परोक्षमें उसके मुखसे जो जो
निकलते, उनका लेश मात्र 'दिग्दर्शन मुक्त
नामा ग्रंथमें ग्रंथकर्त्ताने कराया है: उनमें से

वाचकोंके विनोद एवं आनंदके लिये एक काव्य यहां पर उद्धृत किया जाता है।

प्रक्षाल्याक्षतशीतरश्मिसुधया गोशीर्षगाढद्रवै-
लिप्त्वाऽभ्यर्च्य च सारसौरभ सुरद्रुत्य प्रसूनैः सदा।
त्वत्पादौ यदि वाहयामि शिरसा त्वत्कर्तृकोपक्रिया-
प्राग्भारात्तदपि श्रयामि भगवन्नापर्णतां कर्हिचित् ॥१॥

भावार्थ—हे भगवन्! यदि मैं पूर्णमासोके अखंड चंद्रसे निकली सुधा—अमृतसे आपके चरणोंको प्रक्षालन करूं, गोशीर्ष नामा उत्तम बावना चंदनसे विलेपन करूं, उत्तम सुगंधवाले कल्पवृक्षके पुष्पोंसे पूजन करूं, इस प्रकार प्रक्षालित—विलिम्पित—पूजित आपके उत्तम चरणोंको सदा अपने मस्तकोपरि उठाये फिरूं, अर्थात् आप उपकारीको मैं सदा अपने शिर पर लिये फिरूं, तो भी हे गुरु देव! आपके ऋणसे कभी भी किसी प्रकार भी मैं अनृण नहीं हो सकता हूं!"

सत्य है! सच्चे गुरु भक्तोंके गुरुओंप्रति ऐसे ही—हार्दिक भाव प्रकट होते हैं!। फैजी नामा शायर फारसीके कविने भी एक स्थान पर ऐसा ही भाव प्रकट करते हुए गुरुकृपाके संबंधमें लिखा है।

बहाए रब्बेश्र मेहानम्, बनो मे जां नमे अजंद।

ला नजर शाजद, वहाए वे वहा गर्दद
–" हे स्वामिन्! आपकी कृपा के विना मे
जौं जितनी भी नहीं है। और यदि आप
है तो मेरे जैसा धनवान् भी कोई नहीं
तो मैं वादशाहोंका भी वादशाह

त्व के प्रथम अंक में विद्वद्वर्य मुनि
ने एक प्रशस्तिका विवेचन करते हुये पेथड-
ोंका वर्णन लिखा है, संभव है कि वह पेथड
कि जिसका उल्लेख इस ग्रंथमें है। इतना
अनुमान हो सकता है कि, प्रशस्तिमें लिखे
यमें भोलाकर्ण वालक था। तब भोला
ालक होना पेथडशाहके अस्तित्वका समय
सारंगदेव पेथडका समानकालीन था।
य विक्रम संवत् १३३० से १३५१ तकका
देवका उत्तराधिकारी भोला कर्ण था,
में गादी पर वैठा था और ६ वर्ष १०
दिन तक गुजरातका छत्रपति रहा था।

एक पर्यालोचना–

नेक लोग शंका करते हैं कि, इतना धन
नहीं ? उन महानुभावोंको समझना चा-

हिये कि, सदाकाल किसी भी मनुष्यको या देशको परिस्थिति एक जैसी नहीं रहती है। आज सुनते हैं कि, पश्चिम देशमें दश करोडका मालिक एक सामान्य हालत वाला कहा जा सकता है। तारीख ९ अगष्ट १९२३ के जैन पत्र (भावनगर–काठियावाड) से पता चला है कि, अमेरिकन जॉन डेविड्सन शेक फॅलरकी आमदनी आजसे वीस वर्ष पहले वार्षिक दश करोड डॉलर थी! आज तो न जाने कितनी वढी या घटी होगी?। आज काल हिन्दुस्तानके पीछे दुर्व्यसन थोडे नहीं लगे हुए हैं! हिंदुस्थानको तो प्रायः व्यसनोंने ही नष्ट भ्रष्ट कर दिया है! कुछ महीने पहले लाहौर (पंजाब)के एक उर्दू पत्र में लिखा सुना था कि, हिन्दुस्थानी लोग गत ११ वर्षोंमें डेढ अरबकी शराब पी गये! कहिये वह डेढ अरब रुपया हिंदका ही स्वाहा हो गया न? ऐसी तो फजूल खरची इतनी बढ गई हैं कि, जिसके उल्लेखका एक वडा भारी पोथा सा बन सकता है? दिग्दर्शन मात्र देखनेकी इच्छा होवें तो "भारतदुर्भिक्ष" नामा पुस्तक देख लेना, आशा है उसके पढनेसे थोडी घनीकी कुंभ करणकी नींद अवश्य खुलेगी!

रचनाका परिचय और उपसंहार."

ड़शाहका वर्णन यद्यपि श्रीमुनि सुंदरसूरिकृत
ामें, श्री रत्नमंदिरगणिकृत उपदेश तरंगि-
डित सोम धर्म विरचित उपदेश सप्ततिमें,
रसाल में, झांझण प्रबंधमें, तथा गुर्जर
ाव्यसंग्रहमें भी मिलता है* तथापि इसका
ार पुस्तकका नाम " सुकृतसागर " है,
ंस्कृतमें है। जिसके रचयिताका शुभ नाम
श्री रत्नमडनगणि है। इन महात्माका
य इस मुजिब निर्णीत है। जन्म—विक्रम
५७। दोक्षा १४६३। पंडित पद १४८३।
उपाध्याय) पद १४९३। आचार्य पद १५०२
ावास १५१७। इसलिये चरित्रनायक पेथ-
समयके साथ इस ग्रंथकी घटना बहुत निकट
ती है।

र लिखा जा चुका है कि, पेथडशाह मंत्रीके
र्वाचार्योंने एवं पंडित महानुभावोंने अनेक
। उद्धारक पुरुषके सुकृत्योंका वर्णन किया

ल मांडवगढका वर्णन देखने वालोंको आ-
ारी और तवारीख मालवा आदि उर्दू-फा-
ुस्तकें देखलेनी योग्य है।

है, परंतु वह सब ग्रंथ संस्कृत भाषामें होनेसे आज-कालके संस्कृत विद्याके प्रायः प्रतिपंथिरूप जमानेमें सर्व साधारणको उपकारी नहीं हो सकते हैं। इसी वास्ते इसको गुजराती भाषामें किसी प्रकार मिहनत परिश्रम उठाकर-विक्रम संवत् १९७० में अहमदाबाद निवासी श्रद्धालु धर्मात्मा शेठ मोहनलाल मगनलाल झ्होरीने किसीकी मारफत लिखवा कर प्रकाशित कराया है। वेशक! सेठजी साहवने गुजरात देशवासी एवं गुजराती भाषाके प्रेमियोंको तो पेथडशाहके चरित्रामृतका पान कराया, परंतु इस गुजराती भाषाके अनभिज्ञ संस्कृतशून्य इतर भाइयोंके लिये तो वही बारांवरसी कालवाला ही हिसाव बना रहा! तथापि "वहुरत्ना वसुंधरा" "परोपकाराय सतां विभूतयः" के हिसाबसे लब्ध प्रतिष्ठ-ख्याति पात्र-स्वनाम धन्य-शान्तमूर्त्ति मुनिमहाराज १०८ श्री हंसविजयजी महाराजने हिन्दी भाषा प्रेमियोंके उपकारार्थ यह सुश्लाघ्य उद्यम किया है। आपको सच्चारित्रता, सदाचार-कर्त्तव्यपरायणता, विरक्तता, उदारता, उपकारिता आदि अनेक गुणोंसे भरी हुई जीवनीको पढनेसे अवश्य आनंद प्राप्त होता है। आपकी जीवनी हंसविनोद नामा पुस्तकको

:मी लेखककी लेखिनीसे लिखी गई है।
।का इस लघुतम धर्मबंधुपर प्रथमसेही धर्म
है और इसी लिये प्रसंग पाकर निजकृत
मुझ नाचीजको भी हिस्सेदार बनानेकी
रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तकको प्रस्तावनाके
रह हंसविनोद पुस्तककी प्रस्तावनाका लाभ
इसी सेवकको दिया है। आपने अपनी
(अपने नामके साथ सेवकको मिलाकर
(जो उपकृति, कीहै इस बातका सेवक
ऋणी है।

अंतिम वक्तव्य.

। लघु परंतु अत्युपयोगी आपके लिखे इस
प्रस्तावना लिखनेको आपकी आज्ञाको शि-
समझकर मैंने यथामति यथाशक्ति उस पवि-
की जीवनोपर कुछ प्रकाश डालनेका उद्यम
है। सज्जन गुणग्राहियोंका धर्म है मेरी भूल
धृष्टताका ख्याल न कर वह अपनी प्रकृतिके
ही कार्य करें। पेथडशाहके पुत्ररत्न झांझण-
:के लिये मूल पुस्तकमें काफी जिकर आचुका
स लिये इनके संबंधमें मैंने यहां कुछ नहीं लिखा
ाठक महाशय मूलपुस्तकको देखनेकी हो कृपा

करें। पंपडशाहके संबंधमें भी यात्रादिके प्रसंगों पर कुछ विशेष विचार करना चाहाथा परंतु स्थान और समयके संकोचसे इतनेसे ही संतुष्ट होकर विशेष जिज्ञासुओंको सुकृतसागर ग्रंथके देखनेको सूचना करता हुआ संक्षिप्त रुचिवालोंको इसी ग्रंथको साद्यन्त पढनेकी प्रार्थना करता हुआ अपनी स्खलनका मिथ्या दुष्कृत देता हुआ पुनरपि ऐसे शुभ कार्यके करनेकी अभिलाषा रखता हुआ पाठक महोदय क्षमा कीजिये मैं आपसे विदा होता हूं।

निवेदक–

प्रसिद्ध जैनाचार्य १०८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि (आत्मारामजी) शिष्यरत्न स्वनामधन्य श्री लक्ष्मीविजयजी शिष्यमुनि महाराज श्री हर्षविजयजी शिष्य प्रसिद्ध विद्या प्रेमी मुनि श्री वल्लभविजयजी शिष्य पंन्यास मुनि ललितविजय.

होशियारपुर (पंजाब.)

विक्रम १९८० श्रावण शुक्ला द्वितीया।





ामतिलकसूरिपादैर्विरचितं श्रीमंरूपदुर्ग-
। पृथ्वीधर (पेथडकुमार) साधुकारित-
चैत्यस्तोत्रम्.

वीधरसाधुना सुविधिना दीनादिषु दानिना
जयसिंहभूमिपतिना स्वौचित्यसत्यापिना ।
क्तिपुषा गुरुक्रमजुषा मिथ्यामनोपामुषा
ादिपवित्रितात्मजनुषा मायःमणश्यद्रुषा ॥ १ ॥
ौपधशालिकाः सुविपुला निर्मापयित्रा सता
ोत्रविदीर्णलिङ्गविहनश्रीपार्श्वपूजायुजा ।
ालिसुपर्वनिर्मितलसद्देवाधिदेवान्हय-
ाततनूरुहप्रतिकृतिस्फूर्जत्सपर्यासृजा ॥ २ ॥
े जिनराजपूजनविधिं नित्यं द्विरात्र्यक्तं
ार्मिकमात्रकेऽपि महतीं भक्तिं विरक्तिं भवे ।
न सुपर्वपौपधवता साधर्मिकाणां सदा
विधायिना विदधता वात्सल्यमुच्चैर्मुदा ॥ ३ ॥

श्रीमत्संप्रतिपार्थिवस्य चरितं श्रीमत्कुमारक्षमा-
पालस्याप्यथवस्तुपालसचिवाधीशस्य पुण्याम्बुधेः ।
स्मारं स्मारमुदारसंमदसुधा सिन्धूर्मिपूर्णमज्जता
श्रेयः काननसेचनस्फुरदुरुमाहात्म्यवाम्भो मुचा ॥ ४ ॥

सम्यङ्न्यायसमर्जितोर्जितधनैः सुस्थानसंस्थापितै-
र्यैं र्ये यत्र गिरौ तथा पुरवरे ग्रामेऽथवा यत्र ये ।
प्रासादानयनप्रमाः जनकाः निर्मापिताः शर्मदा-
स्तेषु श्रीजिननायकानभिधया सार्द्धं स्तुवे श्रद्धया ॥ ५ ॥

पञ्चभिःकुलकम्

श्रीमद्विक्रमवत्सयोदशशतेष्वब्देष्वतीतेष्वथो
त्रिंशत्याभ्यधिकेषु मंडपगिरौ शत्रुंजयभ्रातरि ।
श्रीमानादिजिनः १ शिवाङ्गजजिनः श्रीउज्जयंताश्रिते
निम्बस्थूरनगे२थ नत्तन्लभुवि श्रीपार्श्वनाथः ३ श्रिये ॥६॥
जीयादुज्जयिनीपुरे फणिशिराः ४ श्रीविक्रमाख्ये पुरे
श्रीमान्नेमिजिनो५जोनौमुकुटीकापुर्यां च६पार्श्वाद्रिमौ ७ ।
मल्लिः सोयहरोस्तु चोथनपुरे ८ पार्श्वस्तथाशापुरे ९
नाभेयो वनथोपकीपुरवरे१०शान्तिर्जिनोऽर्यापुरे११ ॥७॥
श्रीधारानगरेऽथवर्द्धनपुरे श्रीनेमिनाथः पृथक् १२, १३
श्रीनाभेयजिनोथ चन्द्रकपुरीस्थाने १४ सजीरापुरे १५ ।
श्रीपार्श्वो जल्पद्र१६द्राहडपुरस्थानद्वये १७ संपदं
देयाद्वीरजिनश्च हंसलपुरे १८ मान्धातृमूलेऽजिनः १९ ॥८॥

धनमातृकाभिधपुरे २० श्रीमङ्गलाख्ये पुरे २१
करोऽथ चिक्खलपुरे श्रीपार्श्वनाथः श्रिये २२।
जयसिंहसंज्ञितपुरे २३ नेमिस्तु सिंहानके २४
जिनः सलक्षणपुरे २५ पार्श्वस्तथैन्द्रीपुरे २६ ॥९॥
ान्तिजिनोस्तु तालहणपुरे२७ऽरो हस्तनाह्वे पुरे २८
करहेटके २९ नलपूरे ३० दुर्गे च नेमीश्वरः ३१।
ऽथ विहारके ३२ स च पुनः श्री लम्बकर्णीपुरे ३३
केल कुन्थुनाथ३४ऋषभः श्रीचित्रकुटाचले३५।१०।
विहारनामनि पूरे ३६ पार्श्वश्च चंद्रानके ३७
दिजिनोऽथ३८तीलकपुरेजीयाद्द्वितीयोजिनः३९।
ागपूरे४०ऽथ मध्यकपुरे श्रीअश्वसेनात्मजः ४१
तिकापुरेऽष्टमजिनो४२नागह्रदे श्रीनमिः४३ ।११।
वलक्कनामनगरे ४४ श्रीजीर्णदुर्गान्तरे ४५
रपत्तने च फणभृल्लक्ष्मा ४६ जिनो नन्दतात्।
पुरे जिनः ४७ सचरमः सौवर्त्तके ४८ वामन-
मिजिनः४९.शशिप्रभजिनोनासिक्यनाम्न्यांपुरि५०
पुरे५१ऽथ रूणनगरे५२घोरुङ्मलेऽ५३थ प्रति-
जिनः ५४ शिवात्मजजिनः श्रीसेतुबन्धे५५ श्रिये।
वटपद्र५६नागलपुरे५७प्रुक्कारिकायां ५८ तथा
धर५९देवपालपुरयोः६० श्रीदेवपूर्वेगिरौ ६१ ॥१२॥
ृगलाञ्छनो जिनपति६२र्नेमिःश्रिये देगत्ते ६३
ुरे ६४ऽजितोर्बुकपुरे ६५ मल्लिश्च कोरण्टके ६६।

पार्श्वो ढोरसमुद्रनीवृति ६७ सरस्वत्याऽह्वये पत्तने
कोटाकोटिजिनेन्द्रमण्डपयुतः ६८ शान्तिश्च शत्रुञ्जये ६९ ॥१४॥
श्रीतारापुर ७० वर्द्धमानपुरयोः ७१ श्रीनाभिभूसुव्रतौ
नाभेयो वटपद्र ७२ गोगपुरयो ७३ श्चन्द्रप्रभः विच्छने ७४
ओंकारेऽद्भुत तोरणं ७५ जिनगृहं मान्यानरित्रिक्षणं ७६
नेमिर्विक्रननाम्नि ७७ चेलकपुरे श्रीनाभिभू ७८ र्भूतये ॥१५॥
इत्थं पृथ्वीधरेण प्रतिगिरिनगरग्रामसीमं जिनाना-
मुच्चैश्चैत्येषु विष्वग्हिमगिरिशिखरैः, स्पर्द्धमानेषु यानि ।
बिम्बानि स्थापितानि, क्षितियुवतिशिरः, शेखराण्येष वन्दे
तान्यप्यन्यानि यानि, त्रिदशनरवरैः, कारिताऽकारितानि १६



अनुक्रमणिका.





ान्तिनाथ प्रभोः पादपद्मेभ्यो नमः ॥



ः गिरं पृथ्वी, धरोऽथ पृथु-पुण्यधीः
ताद्यतीर्थेशां, द्वा सप्तनिजिनालयम्
यतारारूयं, रदंड कलाशांकिनम्।
दश लक्षाभि, मंडपान्तर चीकरत्

ाढकामन्त्री

अथवा

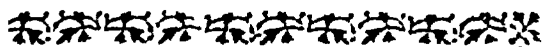
पेथडकुमार का परिचय।

परिचय

ोकके समान अवन्ति प्रदेशमें
के अन्तर्गत नान्दुरी नामक
ी थी जिसमें ऊर्ध्व केशीय (उ-
वंशका एक देदाशाह नामक

पेथडकुमार. २ सुवर्ण.

गृहस्थ रहता था, उसकी अवस्था उस समय दारिद्र्य पीडित होनेसे दयाजनकथी जब वह किसी तरह अपनी दरिद्रावस्था को नहीं मिटा सका तो उसने जंगल में भटकना शुरु किया, कहते हैं कि समय सदैव एकसा नहीं रहता, उसके भाग्यचक्र ने पलटा खाया और दैवयोगसे उसे 'नागार्जुन' नामक योगीराज के दर्शन हुए। जब उस महात्माने उक्त देदाशाह को देखा तो वह प्रसन्न हुआ और उसके चिन्होंसे परोपकारी पुरुष जानकर उसको "सुवर्णसिद्धि" की क्रिया बतलाई। देदाशाहने तदनुसार सुवर्ण बनाया और उस महात्मासें आज्ञा लेकर अपने घर लौट आया।



न की आज्ञानुसार देदाशाह क्रियासे सुवर्ण बनाता और दीन दुःखियोंका दुःख दूर सदैव तत्पर रहता था।

उसकी दया और परोपकारिता गवू फैलने लगी और राजा प्रजा लूम हुआ कि देदाशाह सुवर्ण रहता है और उसके पास ब- द्रव्य है तब किसी बहानेसे राजाने देदाशाह को कैद कर- ! जिससे उसको सुपत्नि विमला सि उसका वियोग हुआ, परन्तु त्तन पार्श्वनाथ के ध्यान के प्र- । वह आफत शीघ्रही नष्ट हो और देदाशाह व उसकी पत्नि ल "विद्यापुर" चलेगये।



एकसमय किसी कार्यवश देदाशाह देवगिरि "दौलतावाद" गये, वहां शुभ भावसे कर्मों की निर्जरा के लिए उपाश्रयमें जाकर सर्व मुनिराजों का वन्दना करता हुआ यह चिन्तवन करने लगा कि धन्य है ऐसे मुनिवरों को जिन्होंने संसार को असार जानकर छोडदिया और मोक्ष की प्राप्ति के लिए ऐसी कठिन तपस्या कर रहे हैं इसी तरहकी अनेक प्रकारकी शुभ भावनाएं भाता हुआ देदा सेठ श्रावकों के पास जा बैठा। उस समय वे श्रावक लोग एक पोषधशाला बनवाने का विचार कर रहेथे, देदासेठ विचार करने लगा कि पोषधशाला बनवानेसे महान् पुण्य होता है, क्यों

साधुओं की बड़ी दुकान गीनी
वहां जाकर भव्य प्राणी व्रता
या करते हैं। देदासेठ ने आ-
प्रार्थना की कि कृपया यह पो-
ता बनवानेकी मुझे आज्ञा दी-
इसपर श्रावकोंमेंसे एक श्रावक
ा कि सेठजी! तुम्हारा कहना
है परन्तु यह पौषधशाला तो
ी बनवाना चाहता है अतएव
ही को आदेश नहीं मिल स-
यह सुनकर देदासेठ बहुत
ाग्रह करने लगा, इस पर एक
कने कहा कि शेठजी, अगर
का ऐसा ही आग्रह है तो सुवर्ण
ौषधशाला बनवादो! सेठने इस
को शीघ्र ही स्वीकार करली, पर

गुरु महाराजने कलिकाल की विपमता दीखाकर समझाया कि सुवर्ण की पौपधशाला बनवाना उचित न होगा।

उसी समयम शहरम एक व्यापारी केशर के ५०॥* थैले विक्रयार्थ लायाथा उनको कोई लेने वाला नहीं मिलता-था इससे उक्त व्यापारी बडी चिन्ता में था उसको सन्तुष्ट करने व नगर को अपयशसे बचाने के लिए देदासेठ ने केशर के सब थैले खरीद लिये और उनमेंसे ४९ थैले केशर के भरे हुए चूनेमें रूलवा कर सुवर्ण मयी पौपध-शाला बनवादी और १॥ थैला केशर का परमात्माकी पूजन के लिए तीर्थों में भेज दिया। देदासेठ की ऐसी उ-

* ५०॥ गुण्यो.

देखकर सबलोग आश्चर्य क-
। जब यह समाचार राजाने
। वह भी बड़ा खुश हुआ और
देदासेठ का सम्मान करके बहुत
से वस्त्रालंकारसे उसको सुशो-
किया।



पुत्ररत्न की प्राप्ती

किस्मत के आगे,
किसीकीकुछ नहीं चलती।
व ही तेरे होते,
के जब तकदीर है फिरती ॥१॥
सौभाग्यवश विमला सेठानीको पुत्र
की प्राप्ति हुई। माता पिताने जन्म

महोत्सव करके पुत्र का नाम "पेथरू कुमार" रक्खा। जब पेथरूकुमार योग्य वय का हुआ तो उसको व्याकरणादि की उचित शिक्षाएं दिलाई गई, वह अपने बुद्धिबलसे कला कौशल्य में निपुण होगया तब उसका विवाह ब-न्धन एक सेठ की पद्मिनी नामक कन्यासे करवाया गया। पेथरूकुमार व पद्मिनी आनन्दपूर्वक रहने लगे इनके संयोगसे "झांझनकुमार" नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। एक समय ऐसा था कि देदासेठ पुत्र बिना तरसता था अब तो पुत्र क्या, पौत्र का भी सुख देदासेठ को प्राप्त हो गया। झांझन कुमार की लघु वयमें ही चम-त्कृत बुद्धि देख कर उसके पितामह

ो समग्र शास्त्रीय शिक्षा दि-
प्रारंभ किया। झांझनकुमार
शिक्षाएं पाकर विद्वान हो
थोडे ही समयमें अपने कुटुम्ब
कर देदासेठ व उसकी विमला
स्वर्गस्थ होगये।

ककुमार के माता पिता के पर-
ास हो जाने के बाद पूर्व स
ाप कर्मों के उदय से उसकी
क स्थिति दिन बदिन गिरने
द्यपि उसके पिता सुवर्ण सिद्धि
त्या जैसी संपत्ति उसको दे गया
किन भाग्य चक्र के फिरने से
। वह क्रियाभीनष्ट होगई! ऐसी
। में भी पेथडकुमार अत्यन्त धैर्य
करके और अपने धर्म पर कटि-

बढ़ रहकर इधर उधर मजदूरी कर अपना उदर पोषण करने लगा।

एक समय सूर्य समान तेजस्वी तपगच्छाधिपती श्रीमज्जैनाचार्य श्री धर्मघोषसूरीश्वर विद्यापुर म पधारे और बड़े बड़े धनाढ्य लोगों को धर्मोपदेश देकर परिग्रह परिमाण व्रत धारण कराने लगे, उस वक्त पेथड़कुमार को गुरुवन्दन करते हुवे देख कर वहां बैठे हुवे श्रावक लोग उसकी हालत पर हंसने लगे और सूरिजी से प्रार्थना करने लगे कि स्वामीनाथ! "लाख वर्षे लक्षाधिपती और कोड़वर्षे कोटीध्वज" ऐसे पेथड़कुमार को परिग्रह परिमाण व्रत क्यों नहीं देते? इस पर गुरुमहाराज ने कहा कि हे भाग्यवानो!



का गर्व कभी नहीं करना चा-
योंकि लक्ष्मीका स्वभाव स्थिर
यह चंचलास्त्री के समान एक
; कर दूसरे के पास जायाही
है इस लिये अपने वैभवका मद
ो नहीं करनाचाहिये ऐसा
र गुरुमहाराजने पेथडकुमार को
के भाई! तुम पञ्चम अणुव्रत-
ण करो यह व्रत तुमको इस
और परलोकमें हितकारी होगा
[। यह उपदेश सुन कर पेथड-
बीसहजार रुपयों का परिमाण
लगा तब उसके हाथ में अही
रेखाएं दिखपडने से आचार्य
ाज ने पांच लाख रुपयों का परि-
व्रत करवाया और कहा कि हे



श्रावक! तू किसी तरहका खेद मत-कर, ये हंसने वाले लोग अज्ञानी हैं लक्ष्मी क्षण भर में राजा को रंक और रंक को राजा बना देती है तेरा भाग्य चक्र तुझको शिघ्र ही अच्छी अवस्था में लाने वाला है ऐसा वचन सुन कर पेथडकुमार गुरुमहाराज को वन्दना कर कर हर्षित होता हुवा अपने घर-की तरफ जाने लगा और कहने लगा कि संसार सागर में फंसे हुये प्राणियों को ऐसे सद्गुरु महाराज ही तार स-कते हैं ऐसे निःस्वार्थ गुरुकी जगत् में बहुत ही आवश्यकता है कितनेक अभिमानी मनुष्य गुरु को नहीं मानते परन्तु वास्तव में ऐसे प्राणी, दया के योग्य हैं इत्यादि विचार करता हुवा

मार अपने घर पर पहुंच गया।

देशान्तर गमन.

ान मुत्सृज्य गच्छन्ति ।
हाः सत्पुरुषाः गजाः ॥
ैव निधनं यान्ति ।
ाकाः कापुरुषा मृगाः ॥ १ ॥

ाह सत्पुरुष और हाथी एक स्थान
ागकर स्थानान्तर चले जाते हैं
विचार करके पेथड़ सेठ सपरि-
मालवा प्रान्त में जाने के लिये
ा होगया, कितनेक दिन बाद
उधर घूमता हुवा वह मांडवगढ
रवाजे पास जा पहुंचा शहर की
ा देखकर उसको बहुत आनन्द
हुवा और शुभ शकुन लेकर न-

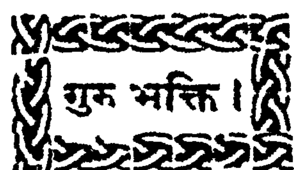
गरमें प्रवेश किया व व्यापार निमित्त दुकान खोल कर धंधा करने लगा।

एक दिन घी वेचनेवाली उसकी दुकान पर आई और भाग्यवश उससे उसको चित्रावेल की प्राप्ति हुई उसके प्रभाव से पेथरू सेठको दुकानमें अखूट घी भरा रहने लगा यह कौतुक देख कर वहां के राजा ने पेथरू कुमार व उसके पुत्र झांझन कुमार को मंत्रीपद देदिया।

एक वक्त राजाकी आज्ञा लेकर पेथरू कुमार सपरिवार तीर्थयात्रा करने के लिये चला, पहले जीरावला पार्श्वनाथ की यात्रा करके आबूके पहाड पर चढा वहांपर श्री आदिनाथ भगवान की यात्रा कर के औषधियों की

के लिये जंगल में घूमने लगा
रकार उसको एक बूटी की प्राप्ति
ो उसका मनोरथ सफल हुवा।
ूटी के प्रभाव से वह लोह का
बनाने लगा जब उसने बहुतसा
बना लिया तो उस सुवर्ण को
पर लदवा कर अपने स्थान मां-
ड को भेज दिया और फिर श्री
देव भगवानके मंदिर म जाकर
र करने लगा कि सुवर्ण के लोभ
ने षट्काय जीवोंकी जो विराधना
है उसके लिये मुझे धिक्कार है,
ा स्वार्थ के लिये निरपराध प्रा-
ंकी हिंसा करना महान् पापबन्ध
कारण है खैर जो होना था सो
गया अब मैं अपने सब सुवर्ण को

तिर्थोद्धार व गरीवों के वास्ते खर्च करूंगा इसी प्रकार के विचार करता हुवा पेथडकुमार अपने घर पर आ कर गरीवोंको दान देने लगा।



गुरु भक्ति।

एक समय माधव नाम का भाट पेथडकुमार के पास आ कर वधाई देने लगा कि हे स्वामिन्! इस लोक और परलोकमें सुख देने वाले जिन सद्गुरु महाराज का आपने आश्रय लिया है वे ही गुरु महाराज श्री धर्मघोषसूरि थोडे दिनों में यहां पधारेंगे यह समाचार सुनकर पेथडकुमार को वहुत ही आनन्द प्राप्त हुवा, और ऐसी व-

ने वाले उस माधव जाट को
ो जोत, व हीरेके दांतों की
वहुमुल्य वस्त्र, पांच घोड़े, और
च्छा गांव पारितोषिक में दिया,
बाद वहत्तर हजार द्रव्य खर्च
गुरु महाराज का बड़ा भारी
महोत्सव कराया ।

क वक्त पेथड़कुमार हाथ जोड़-
ाचार्य महाराजसे प्रार्थना करने
कि हे स्वामिन्! मैंने जो आ-
ासे परिग्रह परिमाण व्रत ग्रहण
है उससे मेरे पास वहुत अधिक
हो गया है उसको किस कार्य में
ना चाहीये कि जिससे मेरा क-
ा हो। उसकी यह प्रार्थना सुन
ार्य महाराज ने फरमाया कि हे

मंत्रीवर ! वह लक्ष्मी स्थिर नहीं रहती इसकी तीन गति अवश्य होती है यानि दान, भोग और नाश। अतएव इसको मंदिर और प्रतिमाए बनानेमें व स्वधर्मीवात्सल्य में व्यय कर देना उचित है क्योंकि इन कार्यों में जो पुण्योपार्जन होता है वह केवलज्ञानी भगवान ही जान सकते हैं। इत्यादि सदुपदेश सुनकर पेथडकुमारने मांडवगढ में अट्ठारह लाख रुपये खर्च कर कर ७२ देरियों सहित श्री आदीश्वर भगवान का मंदिर बनवाया और उसका श्री शत्रुञ्जयावतार नाम रक्खा और पृथक २ स्थानों पर ८३ जिनालय बनवाए, उनमें से कितनेक के नाम इस प्रकार है १ श्री सिद्धाचलपर श्री शां-

स्वामीका मंदिर. २ ओंकारपुर
शारदापत्तन में. ४ तारापुर में
वती में. ६ सोमेशपत्तन में ७
ता में. ८ धारानगरी में. ९ ना-
में. १० नागपुर में. ११ नासिक
१ वडोदे में. १३ सोपारक में १४
पुर में. १५ कोरकागांव में. १६
तीर्थ में. १७ चंद्रावती में. १८ चि-
में. १९ चारूप में. २० ऐन्द्रीपुर
दौर) में. २१ चिक्खल में. २२ चि-
में. २३ वामनस्थली में. २४ जेपुर
१६ उज्जैन में. २६ जालन्धरनगर
२७ सेतुबंध में. २८ पशुसागर में.
प्रतिष्ठानपुर में. ३० वर्धमाननगर
३१ पर्णविहार में. ३२ हस्तिनापुर
३३ देवालपुर में. ३४ जोगपुर में.

३५ जेसंगपुर में. ३६ लिम्बपुर में. ३७ स्थुरादरि मे. ३८ सलक्षणपुर में. ३९ जीर्णदुर्ग (जूनागढ) में. ४० धवलपुर (धोलका) में. ४१ मंकोडीपुर में. ४२ त्रिकमपुर में. ४३ देवगिरी (दौलताबाद) में. इत्यादि अनेक स्थानों में सुवर्ण के कलशध्वजा दण्ड सहित जिनालय व नवाकर पृथ्वी को विभूषित की उस समय उन वे जिनालय पर फरकती हुई ध्वजा पताकाए अपने हाथों से भव्य जीवों को स्वर्ग लक्ष्मी प्राप्त करने के लिये आमन्त्रण कर रहीं थीं।

ब्रह्मचर्य व्रत।

एक दिन पेथडकुमार अपनी स्त्री को कहने लगा कि हे प्रिया! इस दुनिया

र्व्रत के समान दूसरी वस्तुओं
भी सार नहीं है इसके प्रभाव
पको करानेवाले नारदरूपी क्लेश
धारण कर मोक्ष पासके, सुद-
ठ की सूलीका सिंहासन होग-
इस लिये इस अपार संसार समुद्र
रने के लिये यह व्रत नौका स-
है इसके प्रभाव से देवता भी
कार करते हैं। अपना जीवन क्ष
है इस लिये तेरी इच्छा हो तो
ीलव्रत धारण करूं। ऐसा सुनकर
पवित्र हृदयाने प्रार्थना की कि हे
मिन्! आप आनन्द से यह उत्तम
अंगीकार करो मैं अंतराय डालने
ी नहीं हूं। पती पत्नी की शंका
कारण होनेपर यौवन रूपी पहाड

को ठोकर मार कर और परस्पर के प्रेम स्नेह को तिलाञ्जली दे कर बत्तीस वर्ष की युवावस्था में दोनों महानुभावों नें चतुर्थव्रत अंगीकार कर लिया। और इस व्रत का एसी सुन्दर रीति से पालन किया कि उनके वचन से तो ठोक लेकिन पेथड़कुमार के वस्त्र के प्रभाव से ही लीलावती राणीका महान रोग नष्ट हो गया जो कि लाखों रुपये के खर्च करने और अनेक मंत्र जंत्र जड़ी बूटी आदि विविध उपचारोंसें भी नष्ट नही होताथा। एसे ही राजा का पटहस्ती पिशाच लगने से मृत्यु तुल्य होगया था वह भी मंत्री के वस्त्र उढाने से अच्छा होगया इस अद्भुत चमत्कार को देखकर राजाने पांच वस्त्र

त्रक द्रव्य से मंत्रीश्वरका स-
केया और इससे मंत्रीश्वर के
ो महिमा सारे शहर में फैल

ाज्य के अन्दर सात व्यसनों
का निषेध।

च मांसं च सुरा च वेश्या
र्थिश्चोरी परदारसेवा ॥
ानि सप्त व्यसनानि लोके
ाति घोरं नरकं नयंति ॥ १ ॥

एक दिन मंत्रीश्वरने राजा से प्रा-
की की आप अपने देश में उ-
दिखलाए हुवे व्यसनों का सेवन
ा वालों को हुकुम के जरिये रोक
वें तो वहुत उपकार होगा और
त करके इन सात व्यसनों को

रोक पर्व तिथियोंकोतो अवश्य ही होनी चाहिये यानि दुज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, और चतुर्दशी के रोज सप्तव्यसनका कोई सेवन न करे ऐसा आज्ञापत्र प्रकट होना चाहिये क्यों कि व्यसन सेवन से नल राजा तथा पाण्डव जैसे महान पुरुषों को भी बहुत दुःख हुवा है। यह प्रार्थना सुन कर और इसको उचित समज कर राजा जयसिंह देव ने घोषणा द्वारा सप्तव्यसनों का सेवन बन्द करवा दिया।

पेथड्कुमार की तीर्थयात्रा.

एक समय पेथड्कुमार विचार क-रने लगा कि जगत में मनुष्य जन्म

अखूट लक्ष्मी सम्पादन की
कुछ कल्याण नहीं हुवा, न जाने
क्या होने वाला है इसको कुछ
नहीं पकृती। मिट्टी के वर्तन
इस देह का क्या भरोसा है अ-
मनुष्य जन्म सार्थक करने के
तीर्थ शिरोमणि श्री सिद्धाचल-
की यात्रा करनी चाहिये। ऐसा
ाय करके पेथडकुमार ५२ देरासरों
ुत बड़ा संघ निकाल कर यात्रा
े चला। वहां पहुंच कर श्री ऋ-
देव स्वामी के दर्शन पूजन से अ-
। जन्म सफल किया और खूब दान
र करके श्री गिरनारजी जा पहुंचा
ां पर योगिनीपुर निवासी. अला-
ीन वादशाह से सन्मानित पूर्ण

नामक अग्रवाल दिगम्बर श्रावक बड़ा संघ लेकर आया हुवा था। दोनों संघ के लोग पर्वत पर चढनें लगे उस समय दोनों के आपस में तीर्थ के बाबत वाद विवाद होने लगा। एक पक्ष अपना तीर्थ होने का प्रमाण बतलाने लगा तो दूसरा पक्ष भी अपनी नजीरें देने लगा। तब एक वयोवृद्ध पुरुष ने क्लेश निवारण का एक तीसरा रास्ता दिखला कर कहा कि तुम दोनो संघ पती साथ साथ पर्वत पर चढो और इन्द्र माला पहनने के वक्त सुवर्ण द्रव्य की बोली बोलो जो अधिक सोना देवे उसी का यह तीर्थ समझा जाय गा। यह बात दोनो संघ पतियों ने मंजूर करली क्यों कि शूरवीर पुरुष

ं, पंडित लोग शास्त्र से, कायर
से, स्त्रियां गालियों से और वैश्य
पैसे से लड़ा करते हैं। इस फ-
ने सब लोग बड़े हर्ष से रैवत
पर चढ़ने लगे और बाल ब्रह्म-
चक्रचूड़ामणि श्रीनेमिनाथ भ-
र की टूंक पर पहुंच कर दर्शन
। का लाभ प्राप्त किया। जब इ-
ाला पहिनने का समय निकट
।। तब लोग इस दृश्यको देखने
लये उत्सुक हो गये। पहले पहल
|श्वर पेथड़कुमारने पांच धड़ी सोने
ोली बोलना शुरु किया फिर पर-
बोली बढाते बढाते पेथड़कुमार
ान धड़ी सुवर्ण देने को तयार हो
।, उस समय दिगम्बर संघवीको

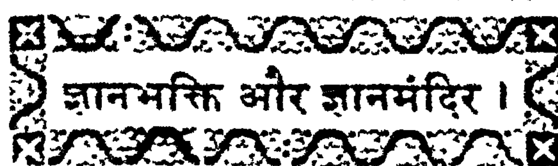
अधिक बोली बोलने की हिम्मत नही हुई। तब सबने मिल कर इन्द्रमाला पेथडकुमारको पहिनादी और उक्त तीर्थ श्री श्वेताम्बर संघ का स्वीकार कर लिया।

मंत्रीश्वर ने इन्द्रमाला से अपने कंठको अलंकृत करके अपना जन्म सफल माना। सर्वत्र मांगलिक बाजे ब-जने लगे और सबके हृदय हर्ष से आनन्दित हो गये। अन्तमें पेथड-कुमार जन्म जरा की पीडाको मि-टाने वाली आरती उतारकर और गिरनार तीर्थपर श्वेताम्बर संघका स्वतंत्र अधिकार सिद्ध करके पर्व-तसे नीचे उतरा और यह वि-चार करके कि देवद्रव्य चुकानेमें

व करने से वहुत दोष लगता है अपनी प्रतिज्ञानुसार छप्पन सोना माण्डवमें देकर देवगुरु भक्ति पूर्वक स्वधर्मी वात्सल्य क- वाद तपस्याका पारणा किया। समय दूसरे धर्म्मोन्नतिके निमित्त ११ लाख रुपये १ वहांपर पेथरू- र व्यय करके माण्डवगढ जाने के रवाना हो गया।



(१) "मांडवगढनो मंत्री पेथडकुमार" नामक राती पुस्तकमें "वलीरूपाना टकाओनी ?? व घडिओं वीजी पण त्यां रचना हुवा" माफिक छपा हुवा है यह भूलसे लिखा गया ऐसा मालुम होता है। (लेखक)



ज्ञानभक्ति और ज्ञानमंदिर।

एक समय बहुमूल्य वस्त्रालङ्कारोसे विभूषित प्रातःकाल के वक्त मंत्रीश्वर पेथड़कुमार घोड़ेपर सवार होकर बड़े आडम्बर से गुरु वन्दना करने के लिये पोशधशाला में गया। भक्तिपूर्वक गुरु महाराज को नमस्कार करके गुरु महाराजका व्याख्यान सुनने लगा, उस समय गुरुमहाराज भगवती सूत्रका कथन कर रहे थे उस कथन में बारं बार श्रीगोतमस्वामी का नाम सुनकर पेथड़कुमार कहने लगा कि हे स्वामिन्! मेघमाला देखकर जैसे मोर नाचता है वैसे ही श्रीवीर प्रभुकी पवित्रवाणी सुनकर मेरा मन बहुत ही रञ्जित

है अतएव मैं इसको सम्पूर्ण
ा, एसी प्रार्थना करके पांच दि-
म्पूर्ण श्रीभगवती सूत्र (विवाह
सि) सुना उसमें श्री गौतमस्वा-
। नाम ३६ हजार वक्त आया उ-
एक एक करके ३६ हजार सुवर्ण
र चढाकर ज्ञानकी अपूर्व भक्तिकी।
सी तरह भृगूकच्छ (भरुच) आदि
ां में बड़े बड़े ७ सरस्वती भण्डार
। कर उनमें अनेक ग्रन्थोंका सं-
करदिया।



पेथडकुमारकी प्रभुभक्ति।

धर्मशिरोमणि सुश्रावक पेथडकुमार जैसे राज्य कार्य में तथा व्यापार कार्य में निमग्न है वैसेही परमात्मा की त्रिकाल पूजन करने में भी कभी प्रमाद नहीं करताथा। एक वक्त मध्यान्ह समय, केवलज्ञानरूपी लक्ष्मी के कीडागृह समान, गृह चैत्यालय में उक्त मंत्रीश्वर प्रभु पूजन करके अङ्गरचना कररहा था, इतने में सारङ्गदेव राजाकी फौजके मांडवगढ पर चढआने के समाचार मिले, उसी समय जयसिंहदेव राजाने मंत्रीको बुलानेके लिये एक सुभटको भेजा परन्तु मंत्री नहीं मिला तब राजाने दूसरा सुभट भेजा

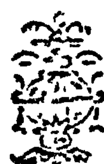
। मंत्री की पत्नीने कहा कि अभी
घर देवपूजन में रुके हुवे हैं इतने
र तीसरा आदमी आया और
दासीके साथ प्रार्थना करवाई
सी समय अत्यन्त आवश्यकीय
आजानेसे मंत्रीश्वरजी को महा-
याद फरमा रहे हैं इस पर पद्म-
अमृत जैसे वचनोंसे उत्तर दिया
नाई अभी तो दोघडीकी देर है।
राजाकी आज्ञाका मंत्रीश्वरने पा-
नहीं किया और प्रभु भक्ति में
लीन रहा मगर इस पर राजा क्रुद्ध
हुवा और चढाई करनेका मुहूर्त
कट होनेसे राजा स्वयं मंत्रीश्वरके
पर आगया उस समय देव विमान
। सुन्दर मन्दिर में पेथडकुमार श्री

पार्श्वनाथ प्रभुकी अंग रचना कररहा था और एकमाली पेथडकुमारको अङ्ग रचना के लिये पुष्प देता जा रहा था। उस मालीको उठा कर राजा, धीरेसे मालीकी जगहपर बैठकर मंत्रीको फूल देने लगा परन्तु प्रभु भक्ति में मग्न होनेसे मंत्रीश्वरको कुछ भी खबर नहीं पडी। लेकिन अनुक्रमसे जैसे चाहिये वैसे फूल न मिलने से प्रधानने मुंह फिरा कर देखा तो राजा साहब दीख पडे! मंत्रीकी देव भक्तिसे प्रसन्न हो कर राजाने कहा कि घबराओ मत स्थिर चित्त से पूजा करो मैं नीचे बैठता हूं ऐसा कहकर राजा उचित स्थानपर बैठ गया। मंत्री पेथडकुमार भी अङ्ग रचनाका कार्य सम्पुर्ण करके राजाके

हुंचा और नमस्कार करके उ-
आसन पर बैठगया । यद्यपि
ने मिलने में मंत्रीको बड़ी देर
तो भी राजा नाराज न होकर
होकर कहने लगा कितुम्हारी
भक्ति देखकर मुझे अत्यन्त आ-
हुवा ।

यह सब पुन्य का ही प्रभाव है
ामे भी कहा है कि प्रीतिपात्र
ा, चतुर मित्रका, निर्लोभी सेव-
ा, और निरन्तर प्रसन्न रहे ऐसे
मीका मिलना बिना पुण्योदय के
ं हो सक्ता है । अब राजा तथा
ी विचार करने लगे कि शत्रुने जो
ई की है उसका मुकाबला करना
संधि करना इस बात का निर्णय

हो जाने के बाद, लड़ाई की तैयारी करके फौजको रवाना करदी। थोड़े ही वक्त में शत्रु सैन्यको पराजय कर कर जयसिंहदेव की सेना, विजयपताका फरकाती हुई वापिस आई।



कलशारोपण।

उपदेश सप्तति नामक ग्रन्थके पेथड़ अधिकार में लिखा है कि सुविख्यात पेथड़कुमार मंत्रीने श्री मंडप दुर्ग (मांडवगढ) के जिनालयोंपर अपने प्रतापके जैसे उज्ज्वल सुवर्ण के ३०० कलश चढाये.

श्री मंडप दुर्गस्थ
न चैत्य शतत्रयं ॥
स्थापय त्स्वर्ण कुम्भान्
प्रतापानिवो ज्वलान् ॥१॥



पेथडकुमारका स्वर्गवास।

यडकुमार अपने शरीरकी अव-
देखकर अपना अन्तिम समय
ट समझकर शान्ततासे परमात्मा
यान करने लगा, संसारकी असा-
विचारने लगा। वास्तवमें यह
र पाणी के परपोटे के समान न-
है इस लिये किसी के साथ वैर
। न रख कर सर्व जीवोंसे क्षमा
ना करके श्री अरिहंत भगवानका

ध्यान करता हुवा, समाधियुक्त, इस असार संसार को छोड़कर स्वर्गलोक को पेथड़कुमार प्रयाण करगया।

झांझन कुमार मंत्रीकी तीर्थयात्रा।

पिताजी के वियोगसे झांझनकुमार अनेक प्रकारके विलाप करने लगा। वहांके अमीर उमराव तथा राजा, विविध प्रकार से झांझनकुमार को शोक निवारण के लिये आश्वासन देते थे पर जिसका हृदय पिताके विरह से विव्हल हो गया है ऐसा झांझनकुमार व्याकुलतासे अपने दिन व्यतीत करने लगा। इस अर्से में एक समय झांझ-

अपने चित्त की शांति के लिये
राजके पास उपदेश श्रवण
के लिये वन्दना करके बैठ
गुरुवर्य ने भी समयोचित उप-
ना प्रारम्भ किया इससे झांझन
का शोकरूपी दावानल शान्त
। तब गुरुमहाराज ने फरमाया
मंत्रीश! संघकी भक्ति करनेसे
व निर्मल होता है इतना ही
किन्तु इससे तीर्थंकर नाम कर्म
ी बन्धन होता है ऐसे संघ का
पती होना बड़ा दुर्लभ है लेकिन
पुण्य के उदय से ऐसा सुयोग
सकता है इत्यादि गुरु महाराज
उपदेश से झांझनकुमारने विक्रम
१३४० माघ सुदी ५ के रोज

शुभ मुहुर्त्त में तीर्थयात्रा करने के लिये ५।७।८ लाख मनुष्योंके साथ प्रयाण किया। उस वक्त अनेक वाजिन्त्र वजने लगे चारों तरफ हाथियों की गर्जना होने लगी, घोड़े हिनहिनाट करने लगे, भाट चारण विरदावली बोलने लगे, यात्रियों की ललनाए धवल मंगल के गीतगाने लगीं। इसी तरह अनेक प्रकारका संघ में आनन्द होने लगा इतनेमें तपागछाधिपति श्री धर्मघोष सूरि महाराज भी सपरिवार संघमें पधार गये।

राजाने भी रक्षा के लिये सुभट आदि संघके साथ भेज थे। ऐसे उत्तम जलूसके साथ संघ आनन्दपूर्वक रवाना होकर करहेड़ा गांवमें पहुंचा।

क्षेत्रपाल के उपद्रवको हटाकर
लय का जिर्णोद्धार कराकर स्नान
लवाला जिनेश्वर देवका प्रासाद
ाया। वहां से अनुक्रमसे नव
राज पहुंचा। संघवी ने मोतियों
वस्तिक प्रमुख से जिनेश्वर देवकी
की। आबूकी यात्रा करके पाटन-
पाटन, आदि नगरों में हो कर
तने क दिनों में संघ निर्विघ्नतासे
शत्रुञ्जय तीर्थको देखने लगा यानी
से गिरीराज के दर्शन करने लगा।
न रोज वहींपर पड़ाव डाल कर सं-
श्वर ११"मूढा गेहूं को (लाल रंग का)

"माण्डवगढ़नो मंत्री" नामक पुस्तक के २३०
पृष्ठ में "संघ अणहिल्लपुर पाटन में आया.
हां यात्रा करके अनुक्रम से शत्रुञ्जय पर्वत पर
ाया, वहां एक बड़ा स्वामी वात्सल्य किया

लापसी बनवाकर संघ में बांटने के निमित्त से तीर्थदर्शन का आनन्द प्रदर्शित कराने लगा।

यहां से रवाना हो कर पवित्र श्री संघ वाजिन्त्रादि नादयुक्त नाटक और धवल मंगल के बड़े ठाठके साथ पालीताने जा पहुंचा। वहां श्री सिद्ध गिरीकी बड़े आनन्दसे यात्रा करके श्री गिरनारजीकी यात्राकी। झांझन कुमार ने सिद्धाचलजी से रैवत गिरी तक ५६ धड़ी सोनेकी लम्बी ध्वजा

---

११ मूंडा गेहूंकी लापसी बनाई–अनेक प्रकार की मन गमती रसोई से सबको जिमाए. भाव पूर्वक यात्रा करके पालीताने आया।" इस प्रकारसे जो लिखा है वह सम्भव मालूम नहीं होता क्यों कि ११ मूडा लापसी से ७॥ लाख मनुष्य नहीं जीम सकते (देखो मूल ग्रन्थ)–लेखक.

ः इसी प्रकार नाना प्रकार के शुभ
। से अपना जन्म सफल करके वहां
ाना होकर वणथली होते हुवे
वती के पास मुकाम किया।

सारंगदेव राजाका सन्तव्य

कर्णावतीके राजा सारंगदेवने अप-
नगरी के पास मांडवगढ के संघके
ावकी रचना तथा मंत्री के उदार
त का वर्णन एक भाट के मुंह से
ाकर संघके मुकाम पर जाने का
वार किया। तदनुसार राजा रवाना
कर संघके पडाव की तरफ गया।
ीश्वरको राजाके शुभागमन की ख-
: मिलने से अपने पडाव को बाहे

तोरण आदि से शृंगार कर स्वयं राजाको पेशवाई में गया और बड़े सन्मान के साथ राजा को अपने तम्बू में पदार्पण करवाया उस वक्त मंत्रीकी पत्नी ने राजाको मोतयों से बधा कर सिंहासन पर बैठाया। राजा, कांचनकुमार आदिका स्नेह भाव से आनन्द मंगल पूछने लगा इस अवसर पर संघ के बड़े बड़े श्रावकों ने राजा को लक्ष द्रव्य की भेट की।

"तृणं लघु तृणात्तूलं
तूलादपि हि याचकः"

इस वाक्य के अनुसार वह राजा अपना हाथ, किसी के हाथ के नीचे नहीं रखता था इस कारण से मंत्री जब राजाको ताम्बुल देने आया तब राजाने उसके हाथ से बोडा झपट

वह देख कर मंत्री चकित हो
मंत्री ने राजाका अभिप्राय स-
र लोगों को दृष्टि के सामने
जाकर एक दम राजा की पसली
ाखा पर्यन्त भर दी। कपूर गि-
गा तब राजा ने अपना हाथ
किया उसी दम लोगों का जय
शब्द होने से सामन्तों के साथ
भी हंसपड़ा इस कौतुक को
कर सब लोग मंत्रीश्वर के धैर्य
बुद्धि बल का यशोगान करने लगे
कार्य किसी ने नहीं कियाथा और
ने कर दिखाया इससे राजाने
न हो कर इच्छित वस्तु मांगने के
ये मंत्रीश्वरको कहा, तब मंत्रीने
र्थना की कि आपकी आज्ञानुसार

आप जैसे कल्पवृक्ष और अविचल वचन पालने वाले स्वामीसे किसी उचित मौके पर अर्ज करूंगा।

कर्णावती में प्रवेश और ८६ राजाओं किबंधन मुक्त होना।

उपरोक्त घटनाओं के पश्चात् राजा सिंहासन से उठ कर सर्व संघवियों को हाथियों पर बिठा कर महोत्सव पूर्वक अपनी नगरी में ले गया।

एक समय मंत्रीश्वर को मालुम हुवा कि सारंगदेव राजाने ८६ राजाओं को कैद किये हैं यह जानकर उनको बन्धन मुक्त कराने का निश्चय किया। उचित अवसर पाकर मंत्रीश्वर ने

ने प्रार्थना की कि मुज को आ-
। वचन दिया है वह पूरा करने
ये अब मैं याचना करता हूँ।
जानें फरमाया कि खुशी से कहो।
ने कहा कि मैं इतना ही मांग-
कि कारागृह में जिन ए८ राजा-
ो आपने कैद कर रखे हैं उनको
कर दिये जाएं। यह सुन कर
र राजाकी इच्छा उनको छोड़ने की
तो भी मंत्रीश्वर की प्रार्थना
ार कर उनको छोड़ दिये।
सर्व राजाओं को झांझन कुमारने
एक घोड़ा और पांच पांच वस्त्र
ण कर के अपने अपने नगर को
ा कर दिये। इस कारण से पृज-
र महाजन ने मिल कर मंत्रीश्वर

को "राजचन्द्री छोटक" इस नामकी उपाधी प्रदान की।

स्वदेश में शुभागमन।

कितनेक समय तक सारंगदेव राजाकी शीतल छाया में रह कर आज्ञा प्राप्त करने के बाद संघ स्वदेश की तरफ रवाना हुवा। अपने अद्भुत कार्यों से सब को आश्चर्य चकित करता हुवा और द्रव्य की वृष्टी वरसाता हुवा संघपती ताम्रावती (खम्बात) आदि नगरों में श्री स्थंभन पार्श्वनाथ महाराज आदि जिनेश्वर भगवान की यात्रा करता हुवा मांडवगढ पास जा पहुंचा।



ाजा तथा नगर निवासियों ने
के शुभागमन को खबर सुन कर
र तोरण पताकाए, बंधवाई और
आनन्दके साथ प्रवेश महोत्सव
या गया। सवारी में राजा के साथ
ी पर चढ कर मंत्रीश्वर हर्षनाद
त संघयुक्त अपने घर जा पहुंचा
: अन्त में सब का उचित सत्कार
सबको अपने अपने स्थान पर विदा
या और माण्डवगढ के सर्व ज्ञाति
लोगो को भोजन कराकर और सं-
ी भक्ति करके राजा का उत्तम स-
र करने के बाद आभ्यार मान
मंत्रीश्वर अपने दिन धर्म ध्यान
व्यतीत करने लगा।





मांडवगढ में ग्रन्थकारों की उत्पत्ति।

श्री विज्ञप्ति त्रिवेणी की प्रस्तावना में ग्रन्थकारों की बावत निम्नानुसार लिखा है—

———

कविवर मंडन और धनदराजका ग्रन्थागार।

मालवा प्रान्त में मांडवगढ (मंडपदुर्ग) इतिहास प्रसिद्ध स्थान है यह शहर औरंगजेब के समय तक तो बड़ा आबाद और मशहूर था परन्तु आज तो उसकी वैसी ही दशा है जैसीकी

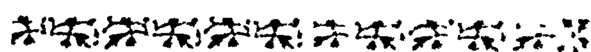
ात प्रान्तके गन्धार बंदर को। मां
था मांडू जिस समय उन्नति के
र पर चढा हुवा था उस समय
पर जैन धर्मकी जी बड़ी उन्न-
ी। उस समय यह स्थान जैन
में मालवा प्रान्त का केन्द्र गिना
ा था। बड़े २ धनाढ्य और स-
धेकारी जैन वहां पर रहा करते
कहते हैं कि वहां पर उस समय
ियों की कई लाख की संख्याथी।
त से क्रोड़पती और लक्षाधिपती
। इस शहर की शोभा को बढाते थे।
ा जाता है कि उस समय इस शहर
एक भी गरीब श्रावक नहीं था।
कोई दारिद्रपीडित जैन बहार से
ाताथा तो शहर के श्रावक लोग

एक एक रुपया उसे सहायतार्थ देते थे और इससे आगन्तुक मनुष्य अच्छी सम्पत्तिवाला वनजाता था।

जैन इतिहासके देखने से पता लगता है कि मंत्री पेथड़, झांझन, जावड़, संग्रामसिंह आदि अनेक श्रावक यहांपर हो गये हैं जो विपुल ऐश्वर्य और प्रभूत—प्रभुता—के स्वामी थे।

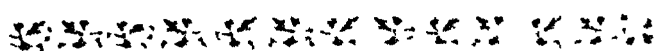
इस प्रकरण के सिरे पर जिन दो भ्राताओं का नाम लिखा हुवा है वे भी ऐसे ही श्रावकों मे सेथे, ये श्रीमाली जाति के सोनीगिरा वंश के थे।

इनका वंश बड़ा गौरवशाली और प्रतिष्ठित था। इनका सम्पूर्ण वर्णन करने का यहां स्थान नहीं है। मंत्री झंझन और धनदके पितामह का नाम

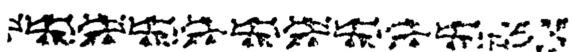


ए था। इसके १ चाहड़. २ बाहड़ हड़. ४ पद्म. ५ आल्हा. ६ पाहु क. ८ पुत्र थे इनमें से देहड़ और तो मांडवगढ के तत्कालीन बाद- [आलमशाह के दीवान थे और ो के अन्यान्य व्यवसायों में अग्र- य थे। इन ८ भाइयों के बहुत से | थे जिनमें से संघन और धनदराज शेष प्रसिद्ध थे।

संघन बाहड़ का छोटा पुत्र था और नदराज देहड़ का एक मात्र लड़का । इन दोनों चचेरे भाइयों पर, ल- री देवी की जैसी प्रसन्न दृष्टिथी वैसी । सरस्वती देवी की भी पूर्ण कृपाथी ानि ये जैसे बड़े भारी श्रीमान् थे से ही उच्च कोटिके विद्वान भी थे।



मंडन ने व्याकरण, काव्य, साहित्य, अलङ्कार और संगीत आदि भिन्न २ विषयों पर मंडन शब्दाङ्कित अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। इन ग्रन्थों में से आठ नौ ग्रन्थ तो पाटन के उपरि उल्लिखित–वाडी–पार्श्वनाथ के भंडार में मंडन ही के (संवत १५०४ में) लिखवाये हुवे विद्यमान हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं–१ काव्य मंडन (कौरव पाण्डव विषयक). २ चम्पू मंडन (द्रौपदी विषयक). ३ कादम्बरी मंडन (कादम्बरी का सार). ४ शृंगार मंडन. ५ अलंकार मंडन. ६ संगीत मंडन. ७ उपसर्ग मंडन. ८ सारस्वत मंडन (सारस्वत, व्याकरण पर विस्तृत विवेचन) और ९ चन्द्र विजय प्रबन्ध।



न के जीवन चरित्र के विषय
नके मित्र महेश्वर नामक कवीने
मनोहर नामक सात सर्गों का
ोटासा काव्य लिखा है उनसें
के पूर्वजों का और संडन का
में जीवन वृत्तान्त उल्लिखित है।
ो भी दो प्रतियें संडन की लिख
हुई एक ही लेखक की लिखी
उक्त भाण्डार में विद्यमान हैं।
संडन की भांति धनदराज या ध-
भी बड़ा अच्छा विद्वान था।
नदत्रीशती" नामक एक ग्रन्थ रा-
र्षि भर्तृहरीकी "शतकत्रयी" का अनु-
ण करनेवाला, उसका लिखा हुआ
। यहां पर इसका विशेष उल्लेख नहीं
यजाताहै तो भी इतना अवश्य



कह देना चाहिये कि इन ग्रन्थों में इनका पाण्डित्य और कवित्व अच्छी तरह प्रगट हो रहा है।

श्री विजयदेव सूरीश्वरको मांडवगढ पधारने के लिये जहांगीर बादशाहका आमन्त्रण.

अकबरके पीछे उसका लड़का जहांगीर बादशाह देहली में तख्तनशीन हुआ* और पड़ाव डालकर मांडवगढ में रहता था। उसने फरमान लिख

* मुम्बई के श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मंडल की तरफ से गुजराती लीपी में छपी हुई जैन ऐतिहासिक रासमाला प्रथम भाग की समालोचना के २६ वें पृष्ठपर श्रीयुत् मोहनलाल दली चंद देसाई बी. ए. एल्. एल्. बी. ने लिखा है उससे उधृत।—लेखक

श्री विजयदेवसूरीश्वर महाराज
अपने पास बुलवाया। उस वक्त
विजयदेव सूरिजी खम्भात में वि-
द्यमान थे। फरमान पढ कर उक्त
रिजी मांडवगढ जाने के लिये रवाना
। और नेमिसागर को राधनपुरसे
ाये। नेमिसागरजी अपने साथ
रसागर, भक्तिसागर, प्रेमसागर, श्रु-
सागर, श्रीसागर, शांतिसागर, गण
ागरइआदि शिष्यों सहित राधन-
रसे मांडवगढ जानेके लिये निकले।
ाब वहांके संघने कहाकि मार्गमें
ोहनपुर पहाडी गांव आता है और
ैसे नाम तैसे गुणवाली सांपिनी,
ोठिनी नामक नदियां आती हैं इस
लये बडी सावधानीसे पधारना। धर्मके

प्रभावसे सब अच्छा होगा ऐसा कहकर गुरुवर्य अहमदावाद होकर चमोदे पहुंचे। वहां श्री जिनेश्वर देव के दर्शन किये और विगयका त्याग कर आम्बिल; नीवी, आदि तप करते हुवे श्री मांडवगढ पहुंचे।

जहांगीर बादशाह से मुलाकात

मांडवगढ पहुंचकर सब मुनिजनोंने श्री विजयदेव सूरिजी को वन्दन किया। सूरिजी की बादशाह के साथ मुलाकात हुई और वार्तालाप से खुश होकर श्री विजयदेव सूरीश्वर को "सवाई महातपा" नामक उपाधि प्रदान की। श्रावक लोग प्रतिदिन महोत्सव करने

। फिर नेमिसागर उपाध्यायजी
गीर बादशाह को मिले वहां परवाद
। उसमे जीतनेसे बादशाहने
सागरजी को " जगजीपक " ना-
विरुद् दिया ।



मंडप दुर्ग में महात्माका चातुर्मास

उक्त रासमाला की समालोचना के
तीस वें पृष्ट में लिख्या है कि संवत
६१६ में जो महाशय श्री हीर विज-
सूरीश्वर के हस्त दिक्षित हुवेथे ये
ी कल्याण विजयजी उपाध्याय श्री
रूपाचल दुर्गको यात्राकरने को पधार-
े और चातुर्मास भी वहीं कियाथा।

श्री सुपार्श्वनाथकी प्रतिमाकी उत्पत्ति और इसतीर्थकीप्रख्याति।

उपदेश तरंगिणी में लिक्खा है कि वनवास में श्री लक्ष्मणजीने सीताजी के पूजन के लिये सातवें श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की मूर्त्ति बनाई उस मूर्ति के सबब से इस तीर्थ की प्रख्याति हुई और चैत्यचन्दन में नीचे लिखे माफिक कहने में आया।

" मांडगढनो राजियो,
नामे देव सुपास।
ऋषभ कहे जिन समरतां,
पहुंचे मननी आस॥ "

मांडवगढ़ मंडन श्री सुपार्श्व जिन स्तवन

णपुर में पास जिनन्द प्यारा ॥ चाल ॥

। फाग ।

वगढ़ में सुपार्श्व प्रभुजी, प्यारा

व० ॥ ए अंचली ॥

वास में लक्ष्मणजीने ए,

पजाया जिन बिंबसारा मांडव. ॥१॥

ता सतीको पूजन खातर,

ए जनमन मोहन गारा मांडव.॥२॥

ल प्रभावे वज्र मय मूर्ति,

गई तेजे जीसा तारा मांडव. ॥३॥

अद्भुत महिमा अखंड प्रभुका,

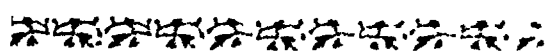
ंकट सब फेटण हारा. मांडव. ॥४॥

सवाहना हिंदोले जिव्हापर,

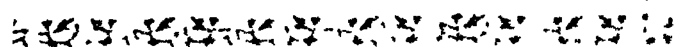
गो जिन गुण गायन कारा. मांडव.॥५॥

मांडवगढतीर्थका दूसरा स्तवन।

॥ जावो जावो नेमि पिया,
थारी गति जानी रे—ए देशी.
तीरथ पवित्र मांडवगढ,
मनो हारी रे. आंकणी.
तीहां शोभे शांतिनाथ,
सातमा सुपार्श्वनाथ ।
विजयानन्द सूरीश्वर,
मूर्त्तिरूपे प्यारा रे ॥ तीरथ. ॥ १ ॥
रामचंद्र लक्ष्मण वीर,
सीतासती अति धीर ।
प्रभु पूजा करी इहां,
शिव सुखकारी रे ॥ तीरथ. ॥ २ ॥
प्रसद पारस प्रभु,
जगतना स्वामी विभु ।



त्वल तेमनु दृतुं,
जीवन आधारा रे ॥ नीरख. ॥ ३ ॥
ते पार्श्व प्रभुनु कीधु,
स्तोत्र जिन चंडे सिधु ।
संसार दावानी लस-
स्यायकी प्रचारा रे ॥ नीरख. ॥४॥
पेथक कुसार संत्री,
झांझनकुमार तंत्री ।
संग्राम सिंहजैन योद्धा,
पुण्यना भंडारा रे ॥तीरख. ॥ ५ ॥
मोटा मोटा ग्रंथकार.
ज्ञानकोशना करनार ।
मंडन कवि धनदराज,
जैन सारा रे ॥ नीरख. ॥ ६ ॥
रतन बाई साथे आवी.
शिवकोर बाई संघ लावी ।



ओगणी सें तोंतेर,
साल उदारा रे ॥ तीरथ. ॥ ७ ॥
गुरु लक्ष्मी विजय सारा,
हंस विजय स्तवन कारा।
यात्रा करी मेरु तेरस,
दिन रविवारा रे ॥ तीरथ. ॥ ८ ॥

मांडवगढ़ में श्री प्रमद पार्श्वनाथका मंदिर।

" संसार दावानल दाहनीरं " इस स्तुति की समस्या पूर्ति वाला प्राचीन स्तोत्र उपलब्ध होता है इससे साबित है कि पेश्तर इस मांडवगढ में श्री प्रमद पार्श्वनाथ का जिनालय था। उक्त स्तोत्र निम्नानुसार है-

॥श्रेयोदधानं कमला निधानं,
पार्श्वं स्तुवेहं प्रमदाभिधानं।

प्रेयसं श्रीसद्दकार कीरं,
ार दावानल दाह नीरं ॥ १ ॥
र्हृत दोपं कृतधर्म पोपं.
न्मुक्त यापं हृत दुष्ट दोपं ।
म्रल श्री रमणीक चीरं,
मोह धूली हरण समीरं. ॥ २ ॥
ानिंद्य विद्या वदनं वदान्यं.
ार्श्वं स्तवीमि त्रिदशेन मान्यं ।
र्म क्रियादासजवाब्धि तीरं.
ााया रसादारण सार सीरं ॥ ३ ॥
असंद संदार सुदाम दिव्य.
प्रसून सारे महितं हि पार्श्वं ।
स्फूर्ज यशस्ताजित हारहीरं.
नमामिवीरं गिरिसार धीरं ॥ ४ ॥
निःशेष लेखवररेख नरेषु कामं.
दानंददान महिमाद्भुत साम्य धेय।

श्रीपार्श्वदेव जयजन्म जरा पहेन.
भावावनाम सुरदानव मानवेन ॥ ५ ॥
निःसंग रंग गरिमादि गुण प्रधानि,
निर्भिन्न उद्धतिमिराणि मनोज्ञदानि।
भक्ति प्रणम्र नर नायक नागलोक,
चूलाविलोलकमलावलिमालितानि॥६॥
कल्याण कारणतराणि गतापदानि,
संपत्पदानि दितदुर्गनि मंगलानि।
निस्सीम भोमभवभाति विभेदकानि
संपूरिता भिनत लोक समीहितानि ॥७
वामेय गेयगुण मानविगान मुक्त,
पद्मावती धरणराज वर प्रयुक्त।
यज्जन्मसंस्ममसुखानि शिवंकराणि,
कामं नमामि जिनराज पदानि तानि ॥८
तापोच्छेदं दिशदनुदिनं प्राणिनां भा-
बुकानां, सिद्धंयस्यामृतरसमयं तुंग
कुंभारप्रवृत्तं ॥ भात्यर्हस्ते सुवचन सरः

पंकापहारि, बोधागाधं सुपदपदवी
पुरात्निरामं ॥ ए ॥ रव्यातावकिमल
ाला नर्मदा शर्मदापि, कासोः कानी
पहारिणी तुंगत्नडातित्नडा ॥ तुंगा
ा जिनमतसरा नातमंतः पवित्रं.
वाहिंसा विरललहरी सगमागाह
ं ॥ १० ॥ त्नोत्नोत्नव्या यदि शिव·
मोक्षलक्ष्मीवुत्नुक्षा, सिद्धांताब्धिं
मनुसरत प्रोल्लसन्न्यायचक्रं । निर्णि
ातः परम गरिमा गारमानंद हेतुं. चू·
ावेलं गुरुगममणी संकुलं दूरपारं ॥११॥
ोहद्रोह क्षितिरुहसमुन्मूलनेदन्ति दृ·
तं, प्रोन्निंदंतं परमतरजः पुंजमुत्कृत
शस्तं ॥ संसेव्यंश्री जिनजनगणैः का·
मदंसंश्रितानां, सारंवीरा गमजलनिधिं
सादरं साधुसेवे ॥१२॥ त्नक्तिप्रह्वामरनरा

सत्वर निकरै निर्जरै निर्मिनायत्, पादाधस्ताद्विहारे वसर भवनिबु-ध्यप्रवृद्धस्य नेतुः॥ उत्तस स्वर्ण वर्णा नव नव कमल श्रेण्यनुश्रेण्यबाधा, आ-मुक्तालोलभृङ्गी बहुलपरिमला लोढ लोलालिमाला ॥ १३ ॥ जातोद्भुतप्र-मोद प्रस्तुतविनतिर्जि भूरि भक्तिं वि-धत्ते, यःपार्श्वेशक्रमाब्जे तव विपुल रमा प्राज्यराज्येन सार्धं । तस्य स्थैर्यं भजेत प्रगत चपलता संततं पट्पदाली, झंकाराराववसारा मलदलकमला गार भूमीनिवासे ॥ १४ ॥ यस्मिन् गर्भा-वतीर्णे जगवति धनदः प्रत्नरत्नैः सु-वर्णैः, कल्याणैर्दिव्यवर्णे रनणु मणि गणै गंधवासैर्ववर्ष । शुश्रूषां कर्त्तुकाम स्त्रिदशवरगिरा सुंदरं मंदिरं वै, माया

रसारं चरकमलकरे नाथहारागत्रि-
॥ १५ ॥ पंकोत्पन्नं गजन्मि प्रच-
र जसा संग मुक्तं विहाय, अर्हद्वच-
निवासं निरुपम परमं याव्यथा तु ता
स्त्वं । श्रेयो लक्ष्मी विलासे नगयति
दे चंडचंड प्रताढ्ये. वाणीनंदोह
हे नवविरहवरं देहिसे देवि न्मारं
१६ ॥ इत्थंश्री पार्श्वदेवक्रितृवन
ाजयी जैन तड्रांघ्रि सेवः, श्रीनिरुक्तान
ोच्छिनयनतमुनिजैनचन्द्रा वि-
न्द्रः । श्री मन्त्रोमण्डपप्रा—गुदय
गिरिशिरो मण्डनं जीवराजी. राजोधा
त्रास हेतुः प्रदिशतुकुशलं श्रेयसे श्री
विलासम् ॥१७॥



शुद्धि पत्रक.

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ट	पंक्ति
फलाशांकितम	फलाशांकितम्	१	४
माहरम	माहरमें	६	४
होगइ	होगड	९	१४
मपधार	मे पधारे	१०	५
नोथ	तीर्थ	१४	१२
मंदिरम	मंदिरमें	१५	९
तारापुरम	तारापुरमें	१९	२
पद्मसागरम	पद्मसागरमें	१९	१३
वधमान	वर्धमान	१९	१४
होगय	होगये	२७	११
संवंक	सवंक	२८	९
शहरा	शहरो	३१	९
पाश्व	पार्श्व	३४	१
मोनयोंसे	मोनियोंसे	४२	५
राजाओंक	राजाओंका	४६	५
घटना	घटना	४६	६
आयभार	आभार	४९	१३
उसक	उसकी	५०	१२
श्रावकोम	श्रावकोंमेंसे	५२	११
श्री–न्	श्रीमान्	५३	१५
लिखह	लिखेहे	५४	४

हंसविजयजी जैन फ्री लायब्रे-
रीमां मळनां पुस्तको.

पुस्तकनुं नाम.		कींमत.
	नीतिदर्पण	०—४—०
१,७	प्राणोपोकार	भेट
१	हंसविनोद	०-१--०
	स्नात्रपुजा	०—०—६
	नवतत्त्वसंक्षिप्तसार	०—२—०
	नर्मदासुंदरी कथा	भेट
१	शीलवती कथा	भेट
१,१७	तिथि तप माणिक्यमाला	०—१—०
२,१३	गहुंली संग्रह	०—३—०
४	श्री नेमिनाथनी पूजा	०—४—०
८	हीरप्रश्न	०—४—०
१९	अष्टापद पूजा	भेट
१०	शुकराज क	०—४—०
	धर्मविधि प्र०	छपाय छे.
	प्रश्नोत्तर पुष्पमाला	०-१४-०
	हीरप्रश्नावली	०—४—०
	देशाटन	०—४—०

लुणसावाडो मोटी पोळ-अमदावाद.

श्री हंसविजयजी जैन फ्री लायब्रेरीमां मळतां पुस्तको.

पुस्तकनुं नाम.	कींमत.
१ श्री कावितीर्थ स्तवनादि संग्रह	भेट
२ श्री संवेगद्रुम कंदली	भेट
३ श्री गहुंली संग्रह	भेट
४ तत्त्वामृत भाषान्तर सहित	०-८-०
५ लाहोरमें श्री विजयसेनसूरिकी पधरामणी	०-१-०
६ सज्जन सदुपदेश	भेट
७ श्री समेतशिखरादि तीर्थयात्रा प्रवास	०-४-०
८ गिरनार मंडन श्री नेमिनाथजीकी अष्टोत्तर शतप्रकारी पूजा	०-८-०
९ लायब्रेरीनो प्रचार केवा प्रकारनो होवो जोइए.	भेट
१० श्री लोकतत्त्व निर्णय ग्रंथ भाषान्तर सहित	०-८-०

ठे. लहेरीपुरा, वडोदरा.